(वादिन्म्मश

প্রভাকরসপাদক পদিরচন্দ্র গুণ্ডের ছাত্র এবং শীল্ম কি কালেজের দ্বিতীয় শিক্ষক

ক্ষেজুর নিবাসি

গ্রীরাধাসাধন মিত

अभीज।

্ শ্ৰীদীননাথ সাহা কৰ্তৃক

প্ৰকাশিত।

কলিকাতা

स्राब-यरम जिलानगित विश्वाम এও কোং कर्ज्य बोहित मृज्ञीलूंद ১० मध्याक उत्तर मूजिए।

বিজ্ঞাপন !

আমার জানগুড় বছদেশীয় কবিরুল-চূড়ামণি र्क्षात्रक्त ७४ महासम काकारल कारणत कर्रांन कराज পতিত হওয়াতে কতিপদ কৰেখক মহাত্মা মাসিক প্রভাকরণার সম্পাদনের ভার গ্রহণ করেন। এইয়াপে কিয়দ্দিৰস বিগত হইলে প্র আদি তাঁহার এক জন ছাত্ত বলিয়া হামার উপরেও উক্ত গুৰুতর কার্যোর ভার সম-পিতি হয়। আমি মাসিক পত্তের সম্পাদকীয় আসকে উপনিত হইতা কত দূর পর্যাত ক্রতকাথা মইতে পারি-যাতি তাহা কেবল ওণ্মাহক গুণশীল মাসিক-প্রপা-ঠক মহাশ্যেরাই বলিতে পারেন, এ বিষয়ে কানাম किए मांज रखन्यः नार्रे। अर्थे मार्मानः कुछ अर्थ व धनक्षी थेग्रांतिक रहेन छोड़ा मुलिभिक धार्म अवर **ছিতীয় শাসিক পত্তে** একবার প্রকাশ করিয়াছিলাম। সামি ক্লক্ষতা-দহকারে স্থীকার করিতেটি যে, যথম উक्ত मन्दर्भ अंडांकत शर्ता ममूमिछ इत उथन **अरमर्क्ट** ভাষার প্রতি প্রতি প্রকাশ করিতে অন্যথা করেন ্ৰাই। একণে কভিপয় বন্ধুর অনুরোধ বশত:ই ভারা পুনর্কার মুক্তিত করিতে বাখ্য হইলাম।

এই পুত্তক বালক ও বালিকাগণের পাঠোপযোগী ছইতে পারিবে এমন প্রত্যাশাও করিতেছি। মন্ত্রচিত প্রথম, দিভীয়, তৃতীয়, এবং চতুর্থ ভাগ কবিভাবলী বে ममस मासूक्न छेषमाहणां । दिनानियाशाक अ भिक्तक-महानव भारा वह छाटम वह विमानित वावका उ मर्म-দুত হুইয়ালে, কণিতাগলীর পঞ্চন তাণা যত দিন প্রচারিত না হয় তত দিন পর্যান্ত হাঁহারা যদি অনুপ্রাহ-পুর্বাক চতর্থ ভাগের পর স্বাস্থ্য অরীনস্থ পাঠশালায় এই গ্রান্ধ প্রচলিত করেন তাহা হইলে আমার পরিশ্রম ও ষ্ট্রের সাফল্য হয় এবং আমিও থারজীবদের নিমিত ক্লজভাশ্বলে বন্ধ হই। এই পুস্তাকর প্রতি সকলেই দে অনুরাগ প্রকাশ করিবেন এমন প্রত্যাশা করিতে পারি না, তবে মহাশয় লোকেরা উৎসাহ বর্দ্ধনার্থ সন্তু-প্রছ বিভারণ করিলেও করিতে পারেন। পরিশে**যে** জগদীশ্বরের নিকটে আর্থনা এই খে, বালকবালিকা-र्भक्ष अहे अन्य भार्व कतिया विनातनावनाय सम विक्र मं इस्

> জীরাধানাধ্ব মিত। নাং জেজুর।

द्वाद्धन्मृपश् ।

স্বপ্নদর্শন

রূপক।

এক দিন একা আমি, করিয়া শায়ন।
ভাবিতেহিলাম কর, মুদিয়া নয়ন ॥
নানা ভাবে ভরা ছিল, মান্য-ভাগুর।
না ফুরাতে এক ভাব, পুনঃ আমে আর ॥
স্থকর ছংখকর, ধরার ব্যাপার।
কত মত মনে এলো, সংখ্যা নাই ভাব ॥
অপরপ ভাব শেষে, হইল উনয়।
বাড়িতে লাগিল ক্রমে, কেবল সংশ্য় ॥
সংসারেতে হিতকর, বিদ্যা আর ধন।
কি ছোট কি বড়, কিসে করি নিরূপন॥

নিজাভার পরিহার, করিয়া স্বাই।

ভ্রমিছে ধনের ভরে, অবসর নাই।

দেশে দেশে, প্রামে প্রামে, নগরে নগরে

শংনের কারণ লোক, পরিশ্রম করে।

विश्व वाशिका करत, वाफाकेटल वसू। ना ভाष्टि वसूत मांशा, शनि शांत असू॥ . जुशिक शांत्मम वर्षे, श्रेका काशमात् । जारथम अन्ती तर्जे शालांत शालांत ॥ मरामत ज्ञानात्रीत, अवल छेशह। मिर्वादिए इम रहि, नियुष्ठ ७९भंत ॥ রাথেন বেডন দিয়া, সেনা দেনাপতি। माधावन छेर्नकारत. तनम वर्षे मण्डि ॥ স্থারচার বিতরণ, করিবার তথে। রাথেন নিচারপতি, অতি সমানরে # लिंख मम लम बटि, अ मकत क्रांता মনে প্ৰলাভ কিছু, অভিপ্ৰায় টাঁর # প্র-আশা কশা নয়, কাহারো অন্তরে। ধন-আশা আছে ভায়, যে কর্মা যে করে॥ अशांशक करत ছोट्य, निमा विख्यन। ধনলাত-আশা তার, প্রধান কারণ । স্থাকার গড়ে হার, হোয়ে সম্তন। मानिरकता करत मीरत, जतनी जालम ॥ कूमात अञ्चल करत, गांधित वामन। বিবিধ প্রতিমা গড়ে, অতি সুশোভন। চিত্তকর চিত্র করে, পট কত রূপ। দেখিতে সুন্দর হাতি, ভাব অপরাণ ॥-राजीकत राजी करत. कतिहा को मन। ं जारि छार्शास्त्र मम, क्रांटन कड कल है

(वादयन्तृमग्र ।

जियक टिंबज निश्चा, मामा द्यांश मार्थ। कू त्वा भगन करड़, वाभित्र खांबारन ॥ कथक करिश कथा, शमांस कें नाम। করিতে ঠাকুর-দেবা, মিডা হিজ যায়। मामां करते महिक्कुछा, कति वादरां मील। আণা-সহ স্থা সব, যত্ত্বে হাস। লেনানি-সহিত আহা, দেনা সমুদ্র। নাহনে সমরে থার. তাতি প্রাণ্টভর ॥ ঘাত্রাকর যাত্রা করে, দাভে কত সউ। হঙু মেথে নামা **চ**ঙে, করে কত রঙ 🛊 वामत विताल मटत, फूटन छेट्टो ब्रांटण। ইচ্ছায় বানর সাজে, অতি জনুরাণে॥ জলে জেলে, জান কেনে, মাতৃ ধরে কত। नामि नरम शिर्व करत, शंध शंकी इन्छ ॥ প্রহরী পাঁহারা দেহ, গ্রহরে প্রহরে। धारे अटना भेट्या मिटल, ऋटल भेतिकटत ॥ क्टिकटर अशस्त्रत, मामञ्ज जीकात। ভিরক্ষার প্রহারে না, মুখ ফোটে ভার । . বোধাবোদ নাছি পাকে, মান অপমান। আদেশে ব্যাতি ধার, অপতের প্রাণ # মহাশারে " মহাশাম " সদা মুখে বলে। বে **পথে** চলায় প্রাভু, সেই পথে চলে। এই क्रार्थ जिट्न तिर्न. मानदनिष्ठ । मकरताई मिक्ष भिष्म कर्स्य देख देश 🖟 🔻

क्विन शर्म स्टाइ, मनाई साकूल। यंथन या करत जात, धन-जाना मूल ॥ गश्मारक शांकिएड लिएन, धन श्राह्म ! थन यात आहरू छोत्र, मकल जीदन ! धन यात्र माहे जात, मर मृनाकात। ্ ধনহীন যেবা ভার, গাছতলা সার। লোকালরে কেবা করে, সনাদর ভার। ভেকে না সুধায় ভারে, যিত্র আপনার # धमशीन दशरम भटक साना काना घटहे। उत्तित दक्षि करम, मार्थि थारक घटडे # मनी यांत्रा छाहारमत, सुरशत मश्मात । গনে জালা নিয়ত, অংশন উপকার॥ विना धटन काम कार्या, ना इस मासन। ্তাই ধনে সকলের, এত আকিঞ্চন॥ **भारत भारत स्विक्शित, श्रामत (भौतत।** थरम कुछ् करत रह, दम स्करम मास्त ? ॥ সংসারে প্রধান ধন, জেনেছি বিশ্বর। थम-नर व्यक्ति कंदित्, कुशना ना रूग्र ॥

विमारिक माशामा कान, मा रश व्यादाहर जमाशा माथम रश, श्रीकारव विमारित ॥ विमार्ग्स काक रश, जल्लोकिक काम। कि श्रुन जक्षित कान, स्य क्षम विश्वास ॥

विमारि मनाई कर्देश, मवात कनान। कि धन अगस आर्छ, नाहि करत मान ?॥ श्राम विकास विमा, वोड़ांश मन्यांन। मटत करत विद्यारमञ्ज, श्रामंत्र वार्थाम ॥ विशानटा करत विना, सर्कि श्रीनान। मिटक बाका विदारसव, वांटका दिन कांग । ইহকালে পরকালে, বিদ্যা করে হিত। विमा-विशेष्टिस्य मनी, घटने विभन्नी । রিভরণে ধন ক্রমে, ফুরাইয়া যায়। विভর্গে বিদ্যা ক্রমে, আরো রাদ্ধি পার ॥ जक्षरहरू धरन करत, अनारम इतन । विमा-अन इरह टाईत, कि आहि अमस्या হাতএব বিদ্যা বড়, পরার ভিতর। मकरलंड ७ जकती, विष्यां भित्रस्त ॥ विमात निकटि यांही, थन कान हात। विमा-भेनागङ धम, इत्र अभिवात ॥ हेक्क् नित्म धरन विमान, करत आकर्षन। जन्भा ८६ रिय धन, द्वाय प्रतन्त ॥ অতএব বিদ্যা-হতে, ধন বড় নয়। দর্বনতে সর্ব্ধর্টাই, বিদ্বানের জয়শা

তা নর তা নর ফিবা, ভাবিতেকৈ দ্রমে। ধন-কাছে বিদ্যা গড়, নর কোন ক্রেনে 🛊

ধন-সহকার বিনা, বিদ্যা মেলৈ কই ।। विमारिक विनिद्धां राज. जास तक रहे ? ॥ বিদ্যা হয় নিয়ত, ধনের যেন কেনা। (मर्थ शंस के कथा, श्रीकात करत रह ना? म कडेश भरनत कांगी. विष्ण कांग रहत। আশা পর্ণ তরে আহা, থাকে যোড় করে। আপনার জোতি: আর. না হয় প্রফাশ। भट्रमत अभाग (शट्छ, मना अख्यिय। বিদ্যার গোরব নাই, ধরায় এথন ! श्रामंत्र १८ शत शीं छ, शीं श्रामर्क जम ॥ कानिटल कोडोनल, विमां काया थादक?। এ কথা বলিয়া জার, জানাইর কাকে?। धनहीन रहेरल. रिश्वान खनांकत। विमा आट्र दोरल जाँदत, त्क करत आमित्र है। (शर्यात्क विमानि घर्मा, वह अकुकेति। বাছারে লিখেছে মাত্র, সন্দেহ কি তার ।। काशारमञ्जूषा मार्क मार्क मार्क भारत करें?। কি ছইবে পোড়ে আর, নেই সব বই ?॥ ধনিদের প্রান্ধর্ভাব, সহিতে না পেরে। হৈরে নর্মে রাখা পেরেঃ পোড়ে গিয়ে কেরে । প্রতিধির ভরে মাত্র, করিয়া কম্পনা। विमारिक वोष्ट्रांटिश मिश्रां, क्लिटिश ब्रह्मा ॥ विवादन करत्रदक्ष मांज, धानश्मा विकास। काराट दुरुम्स मम, जूनित जामात ? ।

(वादधम्मृगग्र।

निज गूरथ निज छन, कतिरल दर्गन। সে কথা প্রতায় যায়, কে আছে এমন ? " ছোট বড সকলে, ধনের গুণ গায়। ধনের প্রশংসা সদা, শুনি পায় পাঁচ। मकल (नार्यत त्नाची, धनी यनि इत। ভাষার দোষের কথা, কেবা কোথা কষ?॥ অভ্ৰের খন হয়, সংসারের সার। প্রের প্রভাবে বাড়ে, সভ্ন সবার॥ গনিলোক জানে ভাল, গনের কি গুণ। विमार्भक जाटन त्यत्रे, विमार्ग्य निश्रं । নিজে আমি ধনে আর. বিদ্যায় বঞ্চিত। বিবেচনা-শক্তি নাই, আমাতে সঞ্জিত। তবে আমি কি বুলিয়া বিদ্যা আর ধনে। ছোট বড় করিতেছি, আপদার মনে?॥ কি ছোট কি বড় কিসে করিব নির্ণয়। যক্ত ভাবি তত হয়, সংশয় উদয় ॥ হুপে থেকে বড় বড়, সাগরের নীর। ছির কে করিতে পারে, কতই গভীর?। क्रमुनिनी, कम्लिमी, कछ मधु धरद । टङक कि विनिद्ध शादत, द्वारक मदतावदत ? ॥ এইরপ হত তর্ক, করি বার বার। তত ভ্রমে পূর্ণ হয়, মানস আমার ॥ लेक्टि जिदि शहर, निक्षा जाकर्रन। अट्टडन इंडेलाम, मूनि छू नरान ॥

* • বুনাইয়া দেখিলাম, অম্ভূত অপন। যাহাতে আমার হোলো, সংশয় ভঞ্জন ॥ चशु प्रतथ (बाह-हेम्मु, इडेन विकास! বোরতম ভ্রমতমঃ, পাইল বিদাশ ॥ আর কি দেখিব আছা! স্বপ্ন ভেম্ম ।। जात कि Coun घूग, शुमांत कथन !!! বর্নিতে দে ছবি, আমি করিতেডি ভয়। शोरक शतिशाम करत, कुरलांकनिष्ठ । ব্যঞ্জ ভূলে কুজনের।, কুকথা ভাষক। দেষভাবে যত পারে, সকলে হামুক্ ম यछ श्रीरत मिनमा कति, डेल्मार मा छुए। অবছেলা করি কাছে আব না আছক। ভগাপি গাঁথিয়া আমি, কবিতার হার। न्त्रभर्मय विवत्तन, क्तिव श्रीहात ॥ গুলিরা উৎসাহ সদা, দেন অনিবার। তাহাতে সহসা বাড়ে, সাহস আমার। मृङ कवि शुक्रशंदर, कार्षि समन्त्रात ॥ क्वल अतमा माज, श्रमांप **डाँ**राह । করিয়া গেডেন কিবা, আসকের জাক্। এক জন বিনা সব, হইয়াছে ফাঁকু॥ পদ্ধর বিয়াছে চুঁছে, ছাতে মাত্র পীক। हारकत वनत्व वांटब, टिस् टिसि मौक । ভাঁহার আসমে বলে, সাধ্য হেন কার।

क्रामाटक कॅम्बाटक शीरत, टक्समें रूक क्रांत है।

रवारमन्त्रम्

পিকের সমুদ্ধ স্থা, ওানেছে যে জন। তাতে কি লাগিতে ভাল, কাকো নিঃ খন ? निटल व्यामि कवि महे, निजाल अव्योग ॥ কবিতা লিখিয়া নাশি: কবিতার মান। आमात नीतम वांद्या, क्विज-कांमिनी। वित्रम-वनना इन, निवम-यायिनी ॥ যোতিভদ প্রহারেতে, ভেকে নিয়া পদ। তাঁহাকে করিয়া খোঁড়ো, ঘটাই বিপান । অলঙ্কার নিতে গেলে, একে আর হয়। 'আগেতে হা ছিল তার, কিছুই না রয়॥ मध मम छन्दीन, छूछि खांत्र नाई। কি লিখিতে কি লিখিব, ভাবিতেভি তাই॥ যা হয় তা হবে পরে, কি করিব ভেবে। একবার দেখা যাকু আদরেতে নেবে ॥ এक এक वांत्र दश, **७८श**ड छेनश। काल मारे किटत शारी, गम कर्य मत । जर भी जशहर भारत, भीठ भी भिष्ट्ये। 'থমকিয়া ভাবনা-প্ৰাাম পিয়া শুই। अन्दर्शाध-शहरण, ८ रहिस कारणट्य। मार्ट्स कृतिश छत्र, माश्विमाय अटम् ॥ यथन जामदत स्मर्टन, तक वक कन। पूरित्क शासिन नारे, त्योजातम मन म তথৰ কোথার লাগি, আমি কুত্র-প্রাণী। শ্রোতারা কি ভলিবেন, শুনি মম বানী ?।

10

वा एक कथान हेटक, जाविस नेक्टर । ब्यून-कथा राख्न कदि, गड्स अस्टर ॥ ध्या माथा ख्यून-इति, कदिव वर्णम । कक्ल व्यक्तिकस्म, कदम अदल ॥

যে রুমণীয় স্বপ্ন দর্শন করিয়াছি তাহার স্ব-ৰূপ বৰ্ণনা কৰা আমাৰ পক্ষে অভি সহজ ব্যাপার নহে। বেলা প্রায় দুই প্রহরের সময় আমি ভোজন করিয়া বাটীছটতে বহির্গত হই-লাম। কোথার যাইব তাহার কিছুই নিজ-পূণ নাই। কেবল অন্যামনক হইরা গমন করিতে লাগিলাম। আমি একেশ্বর, আ मात्र मगण्डियासाद्ध (कर्हे नाहे। विषयम কেবল একমাত্র অনশ্বর, আর বিশ্বস্থিত দমস্তই নশ্বর, এই বিষয় ভাবনা কলিতে করিতে ক্রমে লোকালয় পরিত্যাগ করিয়া বছ দূরে গমন করিয়া পরিশেষে এক নিবিড় গছনে উপস্থিত হইলাম। ঈশ্ব-চিত্তায় আমার মন এতা-कृश निविध रहेब्राहिल, य अमन विकन वटन প্রবিষ্ঠ হইয়াছি বলিয়া কণ্মাত উদ্বিধৃতিত্ত हरेलाम मा। इक्टलगी नवललविं इरेगा

मन्द्र भन्द्र मंत्रीतर्ग-महकाटत (मानात्रभान इड्-ाह, उमृत्ये त्य कि शर्याच बाब्नाम हहेन, তাহাবলা যায় না। যত দুরে গমন করি, তত্ট যেন কাননের শোভার উন্নতি হইতে नानिन। करम (वना अनुताह रुडेन। यनिअ অটবীর বিটপী-সমূহের পত্তাচ্ছাদনে দিনমণির यूथावत्नाकन कतिरु भाति नाहे, उथाभि क-মশঃ আলোর হাদতা হওয়াতে অনুমান করি-লাম, দিবাবদান হইয়াছে এবং সহস্রকর দিন-কর অন্তভূধরাবলম্বী হইবার আর অধিক বিলম্ব নাই। এইৰূপ ভাবনা করিতেই ঘোর অন্ধ কার উপস্থিত হইল, একেবারে দৃষ্টিপথ রুদ্ধ इरेग्ना (भन्। उथन मत्न मत्न छ।वित्रु लाशिनाम। हात्रा कि क्तिनाम, धका धका-ননে কি নিমিত্ত সমাগত হইলাম ? এখানে व्यापिकात कान श्रदशांखन हिल नः। এইवादा বুলি প্রাণ হারাইলাম। বিবেচনা না করিয়া **५**नः भृत्यि मान्यान ना इड्डेग्रा कर्य कतित्वड्डे এই রূপ গটিরা থাকে। আমি এতক্ষণ কি र्ठवृद्धि रहेशाहिनाम ? आत्माश आत्मात

্**ভালয় ভালয় কেন স্থানরে প্রভ্যাগমন** করি: লাম না ?।

> किरमह कांतर्ग, अलग अ राम, এ মতি হইল কেন ?। शिविहा मा दोत, श्रदान होतार. व्यन्ध्व इत दहन॥ मानिशंद्ध मिना, मा लोशंद्य मिना, উপায় করিব কিবা ী কার কাছে হাই, আতু কেহ নাই, **भात कि ८१ तिर निरा** ?a ভাষে কলেবর, কাঁপে থর থর, क्र हृत करत तुक। हरम मां कि शंत. त्हारलां कि रिशंत, मुध नाहे दक हेकू ॥ একি যোর দায়, হোলো হায় হায়, माना (कटा अन श्रीमां। এ লার কেমন, থাকিতে নয়ন, काहा रहेनाम कोना ह था कि उल्लेम, श्रमतागमन, कारनी क्षेत्रिजाम यनि। खरव कि अहेन. उंशतन अमन, शकीं डोक्न-मनी? H

কি করিব কিছুই ত্রির করিতে পারিলাম ন।। একবার তরুমূলে উপবেশন করিয়া গালে इंड अनानशृक्तक छ।विरठ थाहि, शुनर्कात প্ৰাণনাশ-আশক্ষায় অতীব ব্যাকুল হইয়া দ-ভায়মান হই। বহুক্ষণাব্ধি এই ৰূপ করিতে করিতে অনন্তর বিবেচনা করিলাম, যথম জী-বন সংশয় হইয়াছে তথন এক স্থানে থাকিলেই वा कि इट्टेंद्र १ भी देत घोटत का ना कटत शमन করা উচিত হইতেছে। এ কাননে মহর্ষি-গণের আশ্রম থাকিতে পারে, যেহেড় ভাঁছাক: তপদ্য। করিবার নিমিত্ত জনগুন্য কান্নে অং-**স্থিতি** করিয়া থাকেন।ঈশ্বরায়ুকস্পয়ে এবং ভাগ্যক্রমে যদি কোন তাপদের আশ্রমে উপ-**ত্তিত হইতে পারি, তবে অনায়াদেই** জীবন রক্ষার উপায় হইতে পারিবে। এখানে থা-किया क्वल (तामन क्वित्वहें वा कि इहें (व ह ''যতকণে স্বাধ ততক্ষণ লাশ '' লতএব বি-পদগ্রস্ত হুইলে একেবারে হুডাল হুওয়া কাপুর-বের কর্মা মাতা।

মনে মনে এইৰপ আক্ষেপ করিয়া মহর্ষির

ष्ट्रांश्चम असूनकारन यञ्जनील इट्सा **धीरत** थीरत ত্রমণ করিতে লাগিলাম। কোনু দিকে গমন করিতেছি কিছুই নির্ণয় করিতে পারিলাম না। গগনমণ্ডলে নক্ষত্রনপ্রলীর দীপ্তিও দৃষ্টিগোচর रहेनं मा, मुख्तार जक्तकारत जस्तत नाहि পাদ-নিক্ষেপ করিতে বাধা হইলাম। কিয়দ্র গমন করিলে পর. অকন্মাৎ একটা সালে দুটিপথে গতিত হইল। দুর হইতে সেই जात्वा बदरनाकन कविद्रा महमा किश्चि मा-इम् अधिल। मत्न कविलाय, कान मह ধির আশ্রমের সমীপাগত হইয়াছি, অতএব এখন প্রাণ রক্ষা ইইলেও হটতে পারিবে, আত কোন ভয় নাই। যত সেই আলোর মমীপথ হইতে লাগিলাম, ততই আহ্বাদে প্রিপুণ **হ** ইলাম

> সমীপেতে সংবাৰর, করি সরশন। তৃষাতৃত নর হয়, প্রফুল্ল থেমন। চাতকেরা নাভোদেশে, হেরি নব খন। যে প্রকার কোরে থাকে, প্রনকিত-মন।

(वाद्यनमृत्र ।

লানমুখী সরোজিনী, হেরিলে তপন। পূলকে বেমন তার, প্রফুল্ল বদন।। সেইরূপ আলো দেখি, আমার মানস। তুরিল বিরুস ভাব, হইল সরস।।

ক্রমে সমুদায় বন আলোকে পরিপুর্ণ দে-খিলাম। বোধ হইল যেন নিবাকর নিশা-निमाहतीतक मश्हां कृतिया छेन्द्रशिद्धिए छेश-বেশনপূর্ব্যক পুনর্ব্বার দিবা প্রকাশ করিল। **একেবারে সমাক্থাকারে ভাষ ইইলাম**. दुक्रमी विलिशा किए हैं (वाथ विष्टिस ना। पृत হইতে অনুসান করিয়াছিলাস, একটী জ্যোতি-র্মায় দীপ জলিতেছে। নিকটে গমন করিয়া प्रिश्लाम, (कान मीश माइ, क्वा मिवरमं नाव मगुनाव जारलाकमय क्रेयार्ड । जन-শ্বকার অলৌকিক দীপ্তি অবলোকন করিয়া অতিশয় বিস্ময়াপয় হইলাম, ক্রেণ বাতাড কোন কার্টোর উৎপত্তি সম্ভবে না, কিন্তু বছ অনুসন্ধান করিয়া এই অদু ত ব্যাপারের বিশেষ কারণ বুঝিতে পারিলাম না। তাহাতে মনে। ম খ্যে পুনর্বার আশস্কা জন্মাইতে লাগিল।

(वादभम् न स्।

বুনিতে না পেরে আমি, আরোর কারণ।
করিতে না পারি ভরে, চরণ চালন।।
দিন পেথিতেরি কিন্তু, দিনকর নাই।
এমন চইল কেন, তারিরা না পাই।।
পরে ইতন্ততঃ পুনঃ, করি বিচরণ।
ক্ষম্মাৎ দেখি এক, অন্তুত ভরন।।

পেই ভবন অবলোকন করিয়া যে কি প-ধ্যম বিষয়াপর হইলাম, ভাহা কোনগতে ব্যক্ত করা যায় না তাহার কত দার গণনা ক-রিতে নিতান অক্ষ হল্লাস । তাহার চারি-দিকে পরিভ্রমণ করিছে মান্দ করিয়া কোন্মতে क्रडकार्या ५६८७ पारिनाम मा. स्वरहरू जाहा বছদুর বিস্তারিত। প্রচোক দ্বার দিয়া **আলো** दर्शित व्हेट ३ एक। एक गा यथन **या मिटक** গমন করি দেই দিকই কেবল কিরণমালায় विভূষিত, দেখা যায়, অন্ধকারের লেশ মাত্রই নাই। যখন যে ভারের সমীপাগত হই, তখন সেই ভারদেশে একটা স্ত্রীলোককে দেখিতে পাই। তাহাতে বোধ হইল এই স্ত্রীলোঁকেরা দাররক্ষাকারিণী হটবেন। তাঁহারর্দের অন্ম-

মতি ব্যতীত রম্য হর্মে প্রবেশ করিবার অন্য কোন উপায় নাই, কিন্তু কাহারো সহিত আ-লাপ নাই, সুভরাং কোন কথা জিজাদা করিতে प्रदेश माहम इडेल ना। छात्रतकाकारिनी-গাণের আফুতি প্রকৃতি একরূপ ন্তে এবং সক-(नत मयान खरड़ाए नम्, खलाक अठीएमान उन्ना (कर मानमूथी प्रदेश वात्न रक निक्र কাৰনা ক্রিতেছেন। কেহ্ মলিন বসন পবি-ধান করিয়া রোদন কবিভেছেন - কেই সভাই ব্লমা, প্রায় চলৎশক্তি রহিতা,ইইয়াছেন তথাপি कैं। हात्र कलनावना (मनीलामान आह्य बदः কে।ন অলস্কারেরও অভাব নাই। কেছ প্র-খুল বদনে নৃত্য করিতেছেন এবং স্থমধুর স্থান ধরিয়া গনে করিতেছেন। কেহু পুরাভন বস্ত্র পরিত্যাগ করিয়া মুতন বস্ত্র পরিতেছেন। কেই অপুনাকে নানা অলস্কারে অলস্তা ক্রিভেছেন: সন্তর আমি প্রানাদে; মধে প্রবেশাকাঞ্জী হটয়া কোন কথা জিল্পাদা क्रिटिंग क्रिक्ट डेंख्ड श्रामान क्राइन ना, क्रिया व्यवाक स्ट्रेश अक मुरसे नितीकन कतिए था-

কেন। কেছ কেছ আমার ভাব-ভঙ্গিতে আমার অভিপ্রায় বুঝিতে পারিয়া উত্তর প্রদান করেন, কিন্তু আক্ষেপের বিষয় এই যে আমি তাঁহাদের কথা হুদয়ক্ষম কুরিতে পারি না। তাঁহারা আমার কথা বুঝিতে পারি না, আমিও তাঁহাদের কথা বুঝিতে পারি না, হুতরাং কাছারও সহিত কথোপকথন করিতে সক্ষম হইলাম না। তাহাতে মনে মনে বে কোভ জিমিল ভাছা কোনমতে প্রকাশ করিবার নহে।

এইৰপ দ্বারে দ্বারে দ্বারিণালিনী কামিনীগণকৈ জিজাদা করিয়া পরিজ্ঞান করিতে লাদিলান। কিন্তু কোথাও মনক্ষামনা দিদ্ধি হইল
না। ভদনন্তর এক স্বারপালিনীর সমীপস্থ
ইয়া কিঞ্জিৎ ভরদা পাইলাম। ভাঁহার
আরুতি প্রকৃতি দৃটি করিয়া বোধ হইল যেন
ভাঁহার দহিত বছদিন মহবাদ ও কথোপকথন
করিয়াছি। ভাঁহার প্রদাদে নানা বিষয়ে নানা
উপদেশ পাইয়াছি, তিনি আমার জীবিকা
নির্কাহের উপায় করিয়া দিয়াছেন। ভাঁহার

সহবাদে থাকাতে এমন সাহ্স রুদ্ধি হইয়াছে त्य, यथा ट्रेक्टा उथा याहेर जनमर्थ इनेगाहिः গ্রাহার সহিত আলাপ আছে এবং ঘিনি আ-माद मह्मालकातिनी, जाँशात निकटि शमस ক্রিতে আশক। কেন হইবে? স্মাপ্রভা হট্যা তাঁহাকে প্রণাম কবিলে পর তিনি ৩২-क्रनाष्ट्र जागारक हिनिएड शाहिरलन, धवर आ-মার প্রতি পুর্বনিপ মেগ্রাদর্শন করিতে আ-नाथा कविरत्यन ना करते, किस जरुकावपूर्यक বহু বাক্যব্যয় করিতে আরম্ভ করিলেন।

তাহাতে তাঁহাকে কোন নিগুঢ় কথা জিজ্ঞান: क्रिएक इंच्छा इंग्रेन ना, सूकताः व्ययुम्हि नहें। অধিলমে বিদার হইলাম। পরে পুনর্বরে পরিভ্রমণ করিতে করিতে অনেক দ্বার উপ-ক্রম করিয়া পাদকেপ করিতে লাগিলাম, ইতোমধ্যে এক দারপালিনী দূর হইতে আ-गारक व्यवस्थाकन कतिशा सुभन्नेत स्नात मरदः-ধন-পূর্ব্বক ড।কিতে অ'রম্ভ করিলেন। তঁ:গ্র শ্রীচরণ দর্শন করিয়া যে প্রকার সমুষ্ট হুইলাস, তাহা বাক্পথাতীত। পরে তাঁহার নিকটে গমন করিরা ভূমিষ্ঠ চইরা বেমন প্রণাম করিলাম, তিনি তৎক্ষণাৎ আমাকে মাতৃ:রহভাবে কোলে বসাইরা আমার বদন চুম্বন করিতে করিতে বলিতে লাগিলেন।

লোলে আহ, কোলে আয়, অবে বাছাধন।। कि कोइटन, अबोहरन, क्रिक समन ? ॥ ात करियाहि श्रामि, नानन शालन। কবিয়াছি কত তোব, কলাণে সামন। যথম ছিলি রে শিশু, ফুটে মাই বোল। কত ত্ৰেছ কবিষাটি, ভোৱে দিয়ে কোল ৰ স্থানিকা নিয়াছি কল, কথাৰ কথায়। তোর কি পড়ে না মনে, আর কি আসায় ? ॥ আমি ভোৱে শিখায়েতি, কাছারে কৈ **বলে**। মুখজি দিয়াছি তোৱে, বিভিধ কৌশলে। इ: थिमी दलियां जादि, मानां जात नहे। সপত্রীগণের কভ, বাক্য-জ্বালা সই॥ मारामत कारबर्ट काथ. सूरथ मूथ क्रा। काराके जनका करत. है कि शार्त भर १॥ উদর পালনে সাথে, রভ ক্রমাগত। সপত্রীর জনুগত, আ*হে* জবিরত।

টাহার এই সমস্ত আন্দেপেংকি এব করিয়া জিজাসা করিলাম।

কে হও আগিনি, বল গে: জমনি! ध तमा उनन कांत्र । কিংসৰ কাৰণ, করিছ গভন, মম প্রতি অনিবার 📳 धाटक शांटर नांकी, युनिवाटक मार्कि, तम डोशाश (क इस। अक मृत्ये छान्। एएक व्य ग्रहान, भाग संदूर महत हम ॥ পাৰে খাৰাশোষে, এক দ্বাটো এনে, कहें बाध देशलां है। মে ভারপালিনী, অভিযুদ্ধিনী, ज्यितन गरशाविक ॥ সাহসে তথ্য, কংগাপ্কথ্য, করিলাম মহ ভারে। इटेश विषाह. अलाम प्रताय. কেরি তাঁর অহম্বার॥

দ্বাররক্ষাকারিণী আমার ব্যক্তর শ্রনিয়া তৎ ক্ষণাৎ সাদরে ইত্র প্রদান ক্রিলেন।

কর প্রণিধান, বাছা, কর প্রণিধান। मर्ट कारम बन्नकारा, यम कहिनाम ॥ अहे हार्त नाम आधि, कति किर्तानन । अमारिक धारराम साक्ष, अभगाव कलीन ॥ कारत घोटर दर्शतराष्ट्र, त्य नद काशिमी। এক এক আৰু ভারে, ছারেন ব্যক্তিনী ।। लाहिन, विकिक, दिल, भाग छात्र दाह নিশ্ভ কৰেন বছা। ইচিবে যে ভাৰ।। (माथमा भाकित्व अक, अनीवां तमनी ভিন্নই সংস্কৃত ভাষা, আমার জনলা । আনেক বয়স ভারে, প্রিক্টারে কেশ। চলিবার শক্তি আয়, হইয়ারের শেষ।। ধ্ৰিও আমাৰ প্ৰতি, অনুনকের কেন। সময়ে সময়ে পাই, কড মত কৌশা। দাঁছার ভ্রমা যাই, থেঁচে আভি ভাই। শত্র আমার আর, রক্ষা ছিল নাই।। हेरहाकी, श्रीवमा जामा, मश्की वामाव। মনোপারে করিয়াছে, কত অভ্যাতার।। युष्ठाहित् अत्करादत, यस अधिकांत । অনিবার চেন্টা ছিল, পারস্য ভাষার ॥ विवारनत ভয়ে आगि, काथा ना गांहे। থাকিয়া আপন স্থানে, সময় কাটাই।। সরল সভাব মন, সরল সভাব। দিবস্থানিনী আমি, ধবি শান্ত ভাব।।

তথাপি পার্মা ভাষা, মতির্মা পাপিনী। সর্বনাশী পোডাম্থী, সে কালমাপিনী॥ আঘার নিকটে এসে, করি মহাবল। জালাত্ৰ করেছিল, আমাহ সেবল। करने करने मा करड़ करवाल शकार । अथरना तर्गर हिंहा, को जनर को कार ग কত দাগ গাহের আছে, মিলাবার মহ। विक्रिक (भ भव कथा, विक्राहर अभग। (भरवरक दम नैंभेशिकाकी, निक कर्या-कन। विकल कर्मएक उत्तर, भक्त (क) श्ला॥ आगि कलरालां बाही, जनल महला। चानराहि कराइ गमा भवना धावना ॥ धलात सिकाडे भना, बादन धाराक्या। तनथ (ग ध्यात इन, विस्थ किन कास II নপাড়া ইংরালি ভালে। ক্তিম্য থলা। ভাষার বিভাব কথা, লাগি যায় বলা 🛚 भारमा अपरांग माहे. बहिष निष्टार। এখন সে ভেগভাবে, আমাগ্র জ্বার।। অবলা হেবিয়া করে, প্রবল প্রহার। আমার উপর ভারে, নত অভ্যাতার 🛚 क्थन मां कारन त्रतां. मणंडी हाना। भराज्यल क्यों गांज, स्मर्के कुलराना ॥ করিয়াছ যার সহ. কথোপক্রন। ত্বিস্তেছ যে তোমারে, করিয়া যতন #

मिशा अरमङ ज्ञि, योह अक्कांत। দেইতো ইংরাজী ভাষা, সপরা আমার ॥ कांत जात करण मति. याक्ना मनाहै। সোচে অনুগত তার, হয়েছে সবাই ॥ তাই তার বাডিয়াছে, আরো অহঙ্কার। দেখিয়া এমেত তনি, কি কহিব আব ॥ ष्ट्रः थिनी विनिधा दिक्क, आंभाग ना मारन। विनिया ना उटन आहे. आनिया ना जाटन म বেহেতে ভোগায় আমি, করিয়াভি কোলে। জুড়াকু তাপিত প্রাণ, ডাক মা মা থেলে॥ জামার সেমককশা, হেরিলে নথনে। প্রকাশ করিয়া সব, বোলো জনে জনে॥ এখনো অনেকে বাহা, আতে মম পকে। অনেকেই করিতেছে, মুমু মান রুক্তে ॥ मश ही-अधिनी त्यन, इहेर ज ना इश : তা হলে এখন বাঁচি, কল মান রয়॥ দরস্বতা নাম তাঁর, এ ভবন থাঁর। अभिना मकत्म हरू. अशीनी डाइनत ॥ অতি গুণবতা সভা, অমৃতভাবিদী P অপ্রপ রুপ ভার, মানস-মোহিনী। खानमा, निवमा, जिनि, खविस्ता-मानिनी। करुक-वर्मन मना, कन्तानकाहिनी ॥ क्तां मनी विमि जात, तालत जातना ! তার রূপে আলোময়, ছয়েছে অরণ্য।

(वादयन्तृषद् ।

कित! त्याला, बरमारलीला, त्याजिः हाँत किता। अथारन और उप माई. कि निमा कि निना । ছারে ছারে থাকি কাড়া, আমরা সবাই : অবিরত তাঁহার, গুণের গান গাই # ভক্তিভাবে যেবা পুত্রে, তাঁর জিচরণ। দদ্যা হইয়া তিনি, তারে কোলে লন । ভাষাদের মহকার, বিনা কেন জন। করিতে লা পাতঃ ভার, নিকটে গ্রাম 🖟 খোগাও তো নাই, আর এমন ভবন। কত দুর বিভারিত, নাই নিরূপণ ॥ অগণন ঘর জাঞ্জে, ইচার ভিতরে : কাৰ সাধা সম্দায়, দল্পান কৰে[†]॥ गटत गतत कड आवा, मध्याने गाँचे फात । अयुक्त राभात मन, बायुक राभिति। সমুদ্র রমণীয়, ভারনীয় ন্য। স্থিত কে কৰিতে পাতে, কোলা দি কি রয় ॥ মে হারে গাঁহার ইচ্ছা, করিলা প্রেশ। ভ্রমিয়া অনেকে আয়, করিয়াছে শেষ ॥ নিদ্রাহার পরিস্থার, করি অনিবার। करनरक मृतिमा भारह, यथा मात्रा योत्। ত্রিকাল ছবেতে কেহ, ঘূরিয়া কেবল। ভথাপিও পারে নাই, দেখিতে সকল্ 🛭 অতএৰ ক্ৰমিয়া, দেপিতে পারে দৰ। **इश नि. इटव ना, माहे, अमन मामव 8**

কি কৰ অন্যের কথা, বড় ৰড ধীর। शांति भागि अरकशांत्त. शरशत् अधीत । পরিশ্রম শিরত বে. করেছে স্থীকার। সেও পেয়ে যায় নাই, কোনসভে পার । গ্লিলোর বর্ণ হয়, কোন কোন জন। शं इटनटमें अटम कट्ड, श्रेमहाभमम ॥ নেহ কেছ প্রবেশিয়া, দ্বারে এক বার : ্রান-ভয়ে ফিরে গেছে, ভারিখ্র অপার। কেই প্রবেশিয়া কোরে এ মর ও মর। তাৰ বাধা ভাষে ভাষে, হামেতে অস্তার ধ কেই কেছ শ্রমভয়ে, করি প্রাক্তয়। গ্রেছে অনেক স্থানে, ছইয়া সভয় 🛭 क्रियाटक अंदर्गाटन, मंद्रीत शंकम। হরিয়াতে কাল শুধু, করিয়া ভ্রমণ । उशालि अ उदस्त्र , शोरा लीए नाडे। হায় হায়! আজীবন, দুৱেতে সৰাই। সমন্ম দেখিতে, করে না, অভিলাষ। ফোভ লাভ হবে মাত্র, হইবে হতাৰা॥ কেবিহা ভোষাৰ ভাব, করি বিবেচনা। প্রবেশ করিতে তব, নিভান্ত বাসনা । माउत्यत मरम अम, (मथहियां नथा। যভ পারি প্রাইব, তব মনোরঘ। কেনি পথ দিয়া যেতে হবে কোনু যারে। বাছাধন ভোষায় দেখাৰ সমাদতে !

হেরিলে ভোমার মন, হইবে মোহিত। माक्षर कडित कड, लातित महिज ! তাঁহাদের ভাব-জঞ্জি, করি বিসোকন। বুঝিতে পারিবে মনে, কাঁহারা কে হন ৮ डीहोर ७ क्या खान, ल्यानम माहम । **চ**लिलांग ज्ञानांगल, श्ट्य ठाँत वन ॥ अथरमङ् এक माती, कृति नतमन । त्नामल मंतीत जाँत, कमल-नमन h নিয়ত বকিছে, নাই সুখের কানাই। ट्टात थमकिस जामि, अमान मांडाई ! বুঝিতে না পারিলেম, তাঁহার কলে। रियास निज्ञित भर्धा, करनम ज्यम 🛭 সার এক রুদ্ধীকে, হেরি ভার প্র। পুরাতন কথা বলিতেকে, নিরুদ্ধর ৮ मन, ननी, बङ्गांकत, कारम, ভূধत। थाउ, इन, कमर्भन, आरम्भ, नगतः। এই সৰ পৃথিৰীর, কোপায় কি রয়। বিস্তারি বলিছে কেছ, করিয়া নির্ণয়। किरम किरो भिनाहितन, कि अने डेन्य । কেই দিতেছেন আহা, তার পরিচয় ॥ কি ঔষধে কি রোগের, হয় প্রতিকার। क्ह निरुट्ड मूट्थ, विवदन छात् ॥ क्ट्र किंम् अन्तर, कि क्रश अनवर। কি রূপ স্বভাব গরে, বলিভেছে দব 🕫

त्नर वा दिमानशारम, त्वरत डेर्क्सपूरच । গ্রহণতি নিরূপণ, করিতেছে সুথে। কেছ দানা ভৰ্ক, করিভেক্টে উত্থাপন। ्कर किटिक्टर **अ**थु, प्रिक निक्रलंग । নির্ণর করিছে কেছ, ভূমি-পরিমাণ। আকর্ষণ-শক্তি কেছ, করিছে প্রমাণ ॥ কেই খড়ি পেতে কত, করিছে হিসাব। কেই বৰ্ণহার গেঁথে, প্রকাশিতে ভাব ॥ আনিভেতে সমাচার, কেই ভারে ভারে। অসাত্য সাধিতে কেহ, বৃদ্ধি-সহকাবে। এক সের নিয়া কেহ, ভলিতেতে মনে**।** क्यारन अवन इत, चौति घटन गरन ॥ क्रितांच क्रिक्षभ, खाक्करी दिख्य। मति पति अ मन कि, निचारत्त नहीं। कादना दिनशां, जाभिकाम ननसार्व । লসমার ছারা আর, কি লা হতে পারে ? এরপ খণের মারী, আহো কত ভাতে। হেতে পারিলাম কই. স্বাকার কার্ছে । मकरलंब भेडिहर, गरन यरन (भेरव)। श्रेनरक श्रीप्रक करत, हिननाम (परत्र ॥ किছ मृत भिट्य आत, हटल मां हत्रने। जाल राव शिक्तिका कित्री नवन इ করিতেহিলাম গভি, যাঁহার সংহতি। विभि गाउँ योश शरम, मना मम यकि ।

[·] BENT CHA!

महारम হেরিয়া আহা, আনার এ গতি। ছলিতে আসায় কোখা, গেলেন মে সভী। ं अका इहेनांग गामि, गाक दकर मारे। ভাবিয়া আতুল হहे, कूल माहि शाहे॥ काराता मश्डि बांडे, कथन बालांश। मजर असदा कति, कुछरे विलाल ॥ কি করিব কোথা যাব, রয়েছি কোথায়। ভাদিয়া नमन-जल, कति होत होते । भारत भारत क्वल, व्यवाक् रहा श्रीकि। বিশবে পড়িয়া আমি, বিশবেই ভাকি । उथालि रहेन यम, क्यम क्यम। ৰয়ন মুদিয়া ছইলাম, অচেতন ॥ कड कन श्रेट्स मम, होत्ना खोलामा। मम्म विनिया अहिता, रहनम् म स्म ॥ ट्रिनाम जात वक, मांत्री जरूंशमा। मातीकूटन क्रथवाडी, माहे ठाँव गरा ब সহিতে माँ পেরে তার রূপের কিরণ। मूनिनाम ভয়ে ভয়ে, আবার নয়ন॥ তথন সদয়। হন, সেই বিলোদিনী। कदतन अज्यान, अज्यानिया ॥ কি ভয় কি ভয় আর, আমার তদঃ। ভয় পরিহর, হও এখন অভয়।

-

आमि महबाजी अरे छवन सामाद्र। व्यामात स्वमं अहे, आभात स्तम। नशन विशिक्ष विशि, कर मत्रभन ॥ वांनीत मध्द बांनी, अमिश उथम। रिटलांकन क्षित्राम, जाक जिल्हा ॥ কি কৰ রূপের ছটা, অতি অপরুপ। কে দেখেতে কোথা আছে, সে ক্লপ স্থাপ ॥ गगरीन कांहि गमी, स्ट्रेटल छेत्रा आहा, जरू (म दृश्यंत, जुलनां मा इस ॥ त्य उপर्वा विज्ञासिका, त्यं छ-करमवर्ता। गम्ह-कनामिकता, ज्ञान बहिता॥ মনুর সেতার বীণা, পুস্তকগারিণী। हिरुप्रें भरतभावी, अग्रथ-शाहिली॥ मत्म जांट्ड हंत्र तांग, हेडिया तांगिनी। রাণিণীরা আহা কিবা, অমৃতভাবিণী # नंड नंड मश्हती, बाद्ध मृद्ध मृद्ध । विकृतिकहरू (क्टम मृद्य, सूर्थत खत्रक ॥ किना वगश्कांत मात्र जटकत कुरु। अिं मटनांधतं मद, अमूला दङ्ग । गनतिर गोर्ड जाँ नजनित स्रोत। বিনয়ের চাঞ্চিক্ শোভে কোলে ভার # छेशटनम-मुक्कामाना, कर शान जाता। भवना कतिता त्नव, कता बाहि यात्र ह

(वार्थमम्बद्धः

শাত ভাব-কঠমালা, পান কিবা সোভা। । 🚓 विदरमन-माजनङ्, विवासत्मात्मां । ঈশত্তি-মুকুট, মাথার সুনোতিত। গুড়ভজি-চুড়া তার, কাহেছ বিরাজিত 🌬 चामीन डां-छोमांनी, अडीव स्थकः । নিপুণতা-গুজিকানী অতি দীখিকর। মাতৃ ভক্তি-কাণ্ বালা, সুচাক কেমন। পিতৃত্তক-বোদাতেই, লোভিছে অবন ঃ क उञ्ज्ञा-कूमगुग्का, याचि भरिनोहरः। সৃত্তি-সিঁতি শোভা করে; ভালের উপর। বুদ্ধি-কবরীতে বীধা, আঁচে জাম-ফুন্স। पूरे करा कुर्निएउटर, अख्निम-छूत ॥ निक्कें जायी-नर्थ तिगतन, मडाजी-मनक। সত্যতার বাজু কিবা, মানসরঞ্জক । ভাবে ভাবেলা শোভা পায় প্রশংসার টিপ্ माधूडो-मिंबूर हान, खिलाजरक मील । श्टर्भत्र लोविक शास्त्र, महा-श्री एवे लात । পরউপকার-টাড়, অভি চনৎকার গ धार्मिक छो-वां डे ही, टकरम द्या हा कर । भवल जी-महनानी. त्या ही करत कर ॥ भूडतिङ-डोल्सोनाः निल्-यूथकः। বিজ্ঞ**ার জ**বদানা, দেখিতে সুন্র ৮ ্রিণাম-কর্নিতার, নারিকেন-ফুল। अन्दान प्रमुम्म, सूत्रीक अजून ॥

THE P

सन्धारकजान्यामा, भन्न पूरे करता वक् छा- मंकित कंदर्शरण, मरमांहरत । कैंकिटिनट्ड भौतमर्नि डोत हत्म कात । ছির প্রতিক্ততা-গোট, কাছে আছে তার। शांद्र शहां निष्ठसन् अविदान-मल পরস্থাৰ কাতরতা-পাত্তর অমল ঃ धीतर्छा-सक्षमं कांत्र, मादिवत अजही। कियां ब्रमनीत जांचा, मति मति मति मति ॥ गारम-हु हैको, भना सु त्न त्यां हा भारा भारतक शिववासी, मान-रथावा जात । এইরপ কত রপ, ভূষা অপরপ। সর্ব্য গার শোভা পার, আমরি কি রূপ গ स्थित्रा निमियशात्री, मम मिळवत्र। अरक्वरित अवोक्, इरलम रन नमत्। कुलांकती कुला करि, रामम ज्यम। অতুল্য অনুল্য, বাছা! আমার ভূষণ 🛭 অনুগত হয়ে যেবা, মম পূজা কুরে। बहे जब कृषा जांद्र, निहे जमानद्र ॥ দইতে এসৰ ভূষা, বাসনা বাহার ! निवानिनि करत रमहे, वर्कना व्यामात्र ॥ खीटमारकत अख्द्रन, श्रव एव मा शरत। भूकरय भित्रत्व त्नांत्क, छेलेहोम करत । खीरनारकत जुवा बरहे, अमर जुवन। खोटलांटकड़ा शरत बटडे, यथन उपन ह

त्वादशम्मृभः ।

मातीत कृष्ण रांहा, त्यशांटन या माटक। मिहे मास्य थालि जूनी, अ प्लट्ट विदांदण । मां दित चुर्वन माज, अ चूरन सरा। কনক হীর**কে কিছু, নির্দ্মিত** না হয়। महागूला वल जात, कि आंटह अमन। ষাতে মম ভূষামূল্য, হয় নিরূপণ। शूक्रस आंशाह कृमा, कब्रिटन शहर। এক মুখে ভার রূপ, না হয় বর্ণন। পুরুষের যোগা বটে, মম অভরণ। ভाल कारण कारन (महे, श्वरतरह रव असे । মম ভূমা, পরে দেবা, পার দেই যশ। निक्न कहा मृदद्र श्रोकु, मटन जोड़ वर्ग । এইরপ কভ ভ্যা, আতে মন ঘরে। মত দান করি ভঙ, বাড়ে করে করে। মারী ছয়ে চলি আমি, পুরুষের চেলে। मम जुना পिटिंड होत्र, सूर्वान रह रहत्ल म बामात हत्ता गर्हा, लहेटल भारत। कामाश्रांटम खुट्श कह, ममन कहल ॥ এত বলি বাগীখুনী, অতিশ্য স্নেহে। मरक लट्ड एलिटलम, आर्थमात्र (शर्म । যেতে যেতে হেরি যত অদ্ভ নাপার। বর্ণিতে দে সৰ সদা, ছাত্রে বর্ণহার॥ दावीत मश्कि शिक्षां, दानीत मन्तिरः। कतिकाम श्राटबर्स, मल्टल धीटन धीटन ह

विज्ञातिक छन्दिली, सूत्रमा जामाना হেরি নব ভাব কত, আবিভাব গনে। त्मिरिट जीशन जात्र, कतियां कांगमा। শদতলে বসিলাম করিতে, অর্চনা ! े कांद्र এक मोदी बोर्ड, अमन ममग्र। ভিপদীতা **হইলেন.** দেবীর আসয়॥ শত শত সহচরী, চামর ঢ্লায়। **बाहा किता नवाटहाइ, तला माहि घाउँ ए** অতুল বিভব তাঁর, অতুল বিভব। मरण मरक अरला उँति, शकी इस मय ॥ আসা পোঁটা কত মত নিশানের জাক। ঘাতী বাজে, ঘাতী বাজে, বাজে কত শাঁক । हान हेटक कड हानी, हानीभाक थटन। **भानकी बन्नक नं**रत, जीत ছু एए रकरन ॥ কত মত জহরত, মুক্তা জোড়া জোড়া। हुनी मनि, होका जात, माहरतत छाए। । এ**ইরূপ সঙ্গে** তাঁর, কত আড়ধর। হেরিয়া আমার হয়, সভর অন্তর ॥ অনুগত কত লোক, সন্থে দাঁড়ায়। এक जरम जाकित्नरे, गुड जम शांत । মাতলগামিনী তিনি, কুরজনরনা। चुल-करनदर्श उद्, कमन-आंत्रना । অনুভাবে বুঝি তিনি, স্বভাবে চঞ্চদা। এক ঠাই ছিত্ত মন্, যেমন চঞ্চলা 🛊

প্রধা নাহি যায় তাঁর কত অলকার। स्वर्णित गोष्ठ विम, करलेवत जीत । जाशांट करनाइ रान, मनि मुख्ते कन। ন্তু নাতু করিতেছে, সৃতি নিরম্ল । काँदा द्वित वांगरत्वी, अि मगांनदा। কাছে বসালেন আশু, ধরি তার করে। दिलालम बल खान्, अन ममोनात ! কেমন আছেন সব, স্বজন তোমার 🛭 বহু দিবসৈর পর, দেখা তব সমে। कि कांतरन जांगाम, जांगांत मनरम ? भटत (मरी यम थानि, मृष्ठिभां क कति। হেদে হেদে আমায়, বলেন শুভকরী। শ্রনিধান কর বাহা, আমার বছনে। আনার ভাগনী ইনি, জানে সর্বাজনে \$ देशंद आंशांन नामी, तात्क प्रताप्रदत्त। धनार्खां बार्डि थात्क, देनि श्रत गरत ॥ विनात नेपती रहे, चानि त एमन। धरमव केनाती कम, है जिंछ उजमा। এ বনেও আছে বাছা, ভবন ই[®]হার। ঐশ্বেটার কথা আনি, কভ কব আর চ क्रमार्डिन लारिक जानि, विमान कृति मान ইনিও অতুল ধন, করেন প্রদান। चामारक (य करत शृक्षां, विमा शांत त्रहे। ই হাকে যে পুজে, ভার ধনাভাব নেই।

**

এই বনে থাকি राष्ट्रा, जायता कु जन ; मानदात कति कछ, कलानि माधन ॥ আমানের অধিকার, ধরা সমুদয়। আমানের ছাড়া বাছা, কিছুই না হয় ঃ কেহ এঁৰ অনুগত, না চায় আমায়। क्ट में कंचुगंड, हैं होटक ना हांग्र u কেই কেই আমাদের উভয়ের নয়। আমাদের অর্চনায়, রত নাহি রয় 🛚 व्यापानिटन कांट्यायटम, शुक्रा कटत वाता। আমাদের প্রিয়পাত, সদা হয় তারা। बारत (जं बना किंडू, अर्शानमी नहे। क्विन कि खिन (जारत: वाना मना बड़े I আমার অরুজা ইনি, কামি এঁর বড়। रफ पनि मग थाठि, एकि रफ मस ॥ टेनवटगांटन यांडे आबि. ई शांत मनन। ইনিই আ'সেন হেথা, যথম তথম 🛚 নিয়ত রাখেন ইনি, আমার সন্মান। मम भेतावर्ग मां कटबन, दश्कान ॥ যথন তথ্ন ইনি, সাবিতে স্ব কাজ। लहेट कामांत युक्ति, ना करतन गांक # त्यारमण्ड इत्तारी, खांबात भवन। त्मथारन याचेरक मनो, कें कात रखन ॥ ममः नेक्कारत क्यां, करतम किस्त । जानि ना थाकिता होने, हाजांदछन गर-।

यात वांजी शिशं हैनि, इंस अधिकान। তথায় আমার দেখা, যদি নাহি পান ॥ আশুগতি তার নাটী, করি পরিহার। ভানান্তরে যান ইনি, সংশয় কি তার ?॥ कमनार शतिका, अहेतरश निया। क्रग्याल तक्टिलन, नीत्र रहेश॥ উভয়ের অভরণ, কুরি বিলোকন। মনে মনে করিলাম, তুলনা তথান 🛭 কমলার অলস্কার, মুমোছর বটে। मीखिगान ह्याला ना त्या, यानीत निकार ॥ লফ্রীর ক্যার আছে, অনেক ক্রুত্রিয়া সরস্বতা-বিভ্রণ, সব তঞ্চত্রিম॥ लक्षी-प्रया छे जीत, मांशास्त्र हिंद निम । কিছ দিন পার ২০, সকলি মলিন। ব্যবহারে অনাগ্রাসে, হোতে পারে কর। भूमिकभ मूला छात्र, कथन ना त्रा। বাণীশার ভ্রাসব, নিয়ত জলয়। बावशादत मूला बाट्ड, जादश नाश्चिमम । विद्यानांत विमा कात, भरमनात सम। কি বড় কি ছোট, কিছু হোলো শিরপা।। श्वनतीत सरम इत्, मः भग्न छेनत्। **जिट्छ अरम कोनमर्ड, तार्शाम्ह मग्र ॥** नित्रथिशा मक्ती-शारन, छाइ अकतात। महत्रकी-शारम कारत, प्रिथि शूनकीत ।

লক্ষ্মীরূপ বিলোকন, করি হৈ সময়।
লক্ষ্মীকেই একেবারে, বড় বোধ হয়।
আবার বাণীর রূপ নির্মিলে পর।
বাণীকেই বড় জ্ঞান, হয় আশুতর ॥
এইরূপে মনে মনে, কড ভ্রমোনয়।
কোনমতে মাহি হয়, সংশ্য বিলয়।
তাবিক হইং জামি, থাকি এফ পাশে।
কোন কথা জিজোসিতে, নাহি পারি রাসে

সরস্বারি প্রতি লক্ষীর উক্তি।

मठा रहि, काशि रहे, टांगांत कलका।
गठा रहे, जूनि रुध काशांत क लका॥
मठा रहे, लूनि रुध काशांत क लका॥
मठा रहे, लिथ काश्म, एलगांत मचान।
मठा रहे, कशांग कागि, कर मिना।
मठा रहे, कशांग कागि, कर मिना।
का रहे, कर जुमि, कागांत कलाा।
का रहे, कर जुमि, कागांत कलाा।
का रहे, कर जुमि, कागांत कलाा।
का रहे। कर निक्त कित्र काशांन १॥
कामि रहे रिलाश कि, नाहे मुग मान १॥
कामि रहार कि निह्न, रहा भातिहा।
काम नहन रहा, काम कथा नाहि कहे।
सथम उथम कर, सकारां। महे॥

(वार्यनमूपरा

वड़ बोम् त्वीरम कड, मान दिर्घ छनि। शिम्या उज़ारे गर, किंदू मोहि विन ॥ আমার অপেক্ষা তুমি, বড় বড় নও। তবে কেন বড় হয়ে, মানা কথা কণ্ড।। রাথি মান, তাই মান, পাও পায় পায়। আনি না মানিলে কেবা, মানিত তোমায় ? ॥ नग्रमण्ड वर्ड इंड, क्विंड किंवी लोग । লালে বড় হোতে পারো, তবে ধুনা যায়। আর না আসিব বোন্, তব নিকেতনে। এইবার শেষ দেখা, হোলো ভব সনে 🛚

সরস্থতীর উক্তি।

আমার বচন ধর, জোন পরিহার কর,

ক্রোগ করা না হয় উচিত।

ব্যবন্দ মতা কণা, তাতে কেন পাও হ্যথা,

কি বুবায়া ভাব বিপরিত। ছু বোৰে করিলে দ্বন্দু, লোকে কত কৰে মুক্তা,

নিয়ত করিবে উপহাস।

अञ्चलं अभिनी दशदा, किम कर्रे कथा स्टार्स,

केंद्रिट कि बान भीन ।

প্রণয়েতে হয় খাহা, বিবাদে না হয় ভাহা,

ज्ञात कि जाम ना रितार्निम।

मारना कांत्र माहि मारमा, मिरज छूमि छान र

कामि कछ त्रह-अक्रानिती ।

তুমি গুণবতী সতী, কে দিল এমত মতি,
আজু কেন স্বভাবে অভাব ?।

যত অনুরাগ তব, করিলাম অনুভব,
কি কারণে ঘটিল এ ভাব ?॥

অন্য দিন হেখা এমে, কথা কও হেসে হেসে,
স্নানমুখী কখন না হও।

হেরিয়া ভোমার মুখ বিনীর্গ হতেছে বুক,

স্বান্ধ ছেডে ভানা কংগ কও॥

लक्षी।

भिक्कः त्यन वक आंत, विका तिम वक आंतः ।

कानताल खांगिनाम, कर वारकातः ॥

कान तांगिना छेलात, कांगे तांगिना छेलातः ।

काना तांन वक तांगि, गठ त्यक शतः ॥

कांत व्यानता कि कल, आंत आंगात कि कल ॥

कि करेता तांका कांगि, कर मां कि मांगां ? ॥

कांगि के आंगात कांगि, वोगि के मांगां ? ॥

कांगि के आंगात मांगि, वांगि के आंगां। ।

मकता आंगात मांगि, वांगि के आंगां। ।

मकता आंगात मांगि, वांगि के आंगां। ।

वांगि कांति अककांत, विन कांति अककांत।

कांगित मांगि स्वी कांगित कांगित अककांत।

कांगित मांगि, नहे अवला खनलां।

कांगित मांगि अवलां अवलां।

कांगित मांगित सकता वांगी, तहे अवला खनलां।

वत्ना आयात्र कि मारे ? बढ़ना आयात्र कि मारे ?। यथन या हेन्छा कति, अमोशारम शाह ॥ कति अमाना माधन, कति अमाना माधन। সর্কারাধ্যা, কই আর আমার মতন ?। কেবা না প্ৰে আমায় ? কেবা না প্ৰে আমায় ?। আয়ার পুলিয়া কোপা, কেবা কি না পায় ? ॥ मगारनरन रक ना हरल ? मगारनरन रक मः हरन १। मकरलई পर्छ श्रांटक, यम भन्छरल ॥ ভেবে দেখন। ভগিনি! ভেবে দেখন। ভগিনি!। আমার মতন আর, কে আছে ভোগিনী ?॥ (मथ यम मान कड, (मथ मध मान कड। অবিরত অনুরত, ধরাবাদী যত। দৰে হয়ে একনন, সবে হয়ে একনন। মামার পূজায় রক্ত, থাকে অসুক্ষণ ॥ कारता व्यवमह मांहे, कारता अवमत मारे। কেবল আমার তরে, দ্রিছে শবাই॥ কেউ খানায় ভূলে না, কেউ আনায় ভূলে না আমার দেখির কথা, কখন তুলে না। যত ধরার বিভব, যত ধরার বিভব। আমা হোতে হয় সব, আমাতেই সব॥ निमि! आपि मई थांत्र, निमि! आपि मई शांव। আজীবন ছুর্দশার, সীমা নাই তার # বিনামম সহকার। বিনামম সহকার। नश्मोदत योकिट्ड भीटत, दश्म माथा कात्॥

া সব করিব প্রচার, সব করিব প্রচার। তবে তো জানিবে তুমি, ক্ষমতা আমার #

> আপনি প্রবলা, কমলা অবলা, निमि! गत्न कि ८७८वछ ?। হোয়ে বুদ্ধিমতী, তুমি সরস্বতী, ভ্ৰমকপে কি নেবেছ ?॥ মানিও তোমার, কত উপকার, कतियाहि क ना कारन ?। সে সব একণে, পড়ে কি না মনে, মত হোগে অভিমানে॥ एका है वश्वकृत्य. कांट्र कांच्य कांच्य. তোঁশা হোতে ছোট নই। यारत जिज्लांतिरत, तमहे ट्लां नित्तत, আমি কৰ বড় হই॥ প্রার বিভব, যত দেখ সব, ৰিদি আমারি তো হয়। ধা আছে গাহার, সকলি আমার, আমা ছাড়া কিছু নয় # यम निटकलन, यम जैश्वन, মম চাৰু তৰুগণ। সুমধুর ফল, তাহাতে সকল,

> > শোভা করে উদ্দীপন।

' (वादश्यम्पर्य।

किता गरमाहम, वांशा चारे गग, আমারিতো সরোবর। আমার বসন, আমার ভ্ৰণ, মম মণি মুক্তাকর॥ ন্ম ধাতু হত, আমার রজত, তাখার কনক সব। ক্ষতা আযার, কেমনে তোমার, मिनि द्दा अञ्चव थ। তামার প্রবাল, আমার ভ্যাল, আমাৰ শালের থেডা। মার্মার ভো ঘড়ী, আমারি জো ছড়ি-আমার টাকার ভোড।॥ আমার মাতজ, আমার তুরজা, আমার মহিষ মেষ। আমার বলদ, আমার গরদ, আমার বনাত খেল ॥ আমারি তো গবী, আমারি তো ছবি, वामाव देवरेकशाना। আমারি তো সেজ. আমারি তো মেজ. 'আমার বিভান' নানা # আমারি ভো পথ, আমারি ভো রথ, আমারি ভোষক গরি। স্বামারি ডো জল, আমারি ভো স্থল, व्यक्ति मागत, नहीं ॥

আমারি ভো সাজ, আমার জাহাত, আমার ভাষার পালি। मकल क्षेकांड, खड़नी जागांड, আবার যে দাঁত হালি # আমার ওদন, আমার বাঞ্জন, আমারি তো দাস দাসী। जदम खडार, मामश्री ज्ञात, जाकारीय वानि वानि ॥ আমারি তো জাঁক, আমারি ভো শাঁক. আমার হলজ বাঁশী। আমারি ভো তাক, আমারি ভো চাক, আহার সাঁনাই কাঁসি॥ ह्यां प्रति देखां तम्म, क्यांगात श्रीमम, আমার সকল রাজা। आंद्रांत अशीन, स्टाट्य निर्मितन, अत्त कृद्ध बाब कारी ! सम मिश्क्षांमन, मम त्मनांशन. মম সেমাপতি যত। व्यक्षिया (प्रथ मां, जोनिया जान मां, আমার গোরব কত।

ভাগিনি। বিবেচনা করিয়া দেখা, তুমি আমার অপেকা কোনমতে গ্রেষ্ঠা নও। এই জগন্মওলে যে ছলে যাহা আছে সমস্তই আ মার অধিকারভুক্ত। আমি যাহাকে যাহা
দান করি দেই তাহা পায়, নতুবা কোন ৰূপে
পাইবার উপায় নাই। যে ব্যক্তি আমাকে
পূজা করিতে কিয়া আমার অনুগত হইতে
ইচ্ছা না করে, তাহার দুর্দশার সীমা থাকে
না। তজ্জনা আমার উপাদনা না করে এমন
মানব অতি বিরল। যে ব্যক্তি আমাকে যেকপ ভক্তি করে আমি তাহাকে দেইকপ ঐশুর্য্য প্রদান করি।

আপনাকে আপনি বড় বলিলে কিছু বছ হণয়া যায় না, লোকে যাহাদে বড় বলে তা-হাকেই বড় বলা যাইতে পারে। কিন্তু যখন আমাকেই সকলে বড় বলিয়া থাকে তখন আমি যে নিশ্চয় বড় তাহার আর সন্দেহ কি আছে।

সরস্তী।

কি কথা বলিলে বোন্, শংনে ছাসি পায়।
আপনাকৈ বাড়াতেছ, কথায় কগায়।
কোৰ ভৱে করিভেছ, আপন বড়াই।
ছি ছি বোনু কিছু কি লো, বিকেচনা নাই।

जूनि यनि करूँ वल, निमा गाँँ छात।
गता खान करिए छह, विभाल धतात्र॥
आगि यनि करूँ कथा, वलि ला एडागात्र।
छाहा दशेदल मकदलहें, मृथिदव छागांत्र॥
स्मादिन छेंडरात, श्रद्धांत प्रस्त ।
कारता खरंगांच नाहें, छाटन मर्स हम।
नीत्रव हहेंगा खात्र, थांकिएड ना थाति।
दम्मादकत कथा खात, महिएडड नाथि॥
वारा मख हांदल खात, थारक ना कि खान
हांदि हशेरा करना ना, वहुत अथ्यान॥

ল স্মা

(किसांत वहन खेटन, मर्क्स अप अटल।
किस कृषि वह इस, नक् दिनां वरन ॥
विश्वामिति दिन आत्र, किटिक दिनां ।
अथटा कि मुक्ति मां, गक वर्ता दिन ॥
कृषि वर्गन्, नक् किटम, दत मध्यमि।
हुभ कादि थोका जन, मा दस विश्वाम ॥
आगि सम आहि निमि? कृषि वक काटना।
कार्यात वर्गाटन, वर्गन्न, दक्त क्रांटना।
कार्यात वर्गाटन, वर्गन्न, विकाम माहे।
माटन माटन खेद दिनां, निकामदस वाहे॥
थाकिटन क्रांटन आद्रां, वर्गिंद ख्रमांम।
कि विनटक, कि विनद, घरित ख्रमांम।

(वार**धन्**मृषश् ।

সরস্বতী।

এত লো উতলা কমলা কেন ?।

চঞ্চলা মতন চঞ্চলা যেন ॥

তিনিনি! আগার বচন ধর।

যেও না ক্লেক বিলম্ব কর ॥

কিলের কারণ এতই ক্রেপে?।
উন্মতা তোমায় হোতেছে বোন ॥
এলায়ে পড়েছে, মাথার কেশ।
নাই কি তোমার ধীরতা লেশ ?॥

লক্ষী।

বেখালেতে মান নাই, শুধু অপ্যান।
উচিত না ধ্য় সাব, তথা সবজনে।
আনি কি সামানা লেতে, লেবেল ভিনিনী গা
মহীতে নবের আনি, পানলকারিনী ।
আব গোটা কত কথা, বোলে এই বাবে ।
ভাল যে বে জানাইব, ধ্যমতা আমারে।
বুলিতে আনাা, মানা, মাধা আগতে করি।
নানা জালে মানা ভাবে, পরি নানাছার।
অনস্ত জানার জীলা, অনস্ত মহিমা।
নিলেপন কে করিবে, ম্য গুন্নীয়ে গা
সন্মারা বর্জি, ম্য স্বিক্রি।
কানা ভাতে জগতের, কত উপ্করি।

आंगांत कृशांत वारः, म्यून्य जीव। আনা হোতে হয় শুধু, সংসারের শিব # रहेटल भागांत दक्तांत, घटि मञ्चलत । मध्यत मह जातम, माती अब्दर्भ ।। लक्ष्मी इंग्लंड इंटल (मथ, मांगा जांना घटें। তবুদ্ধির বৃদ্ধি আই, নাহি থাকে ঘটে॥ (अट्डेंत खोलाव इत, मना खोजा उन्। মান্সিক শান্তি নাশ, পায় প্রতিক্র।। পেট পেট কোরে খেলা, नियन गांकुल। योकांत (शंदिहर मांग, जानमात मल। क्तिमहम क्लिंगात एक, इत्त माई अस १। কোনে তোমার প্রতি যাবে ভার মন ? ॥ ষাহাতে পুভিবে দেই, ভোষার চরণ। क्रिएम कहिएन नम, जाह और भागामण्डा কেমনে সে প্রকাশিতে, রুদ্ধিত কৌশল 🕬 কেমতে ক্রিবে ভোগ, কেলিগ্রেক কল ।।। उत्मरम €म भिरुव छव, घट७ घ७ मान। কেমনে ভোষার **পথে**, হবে আগ্রয়াম ৪ ॥ কেমনে করিবে তব, গুণের স্থান গু। কেমনে রাখিনে সেই, ভোমার সন্মান 🤈 ॥ সঙা বটে তব পথে, করিলে গমন। আনাগানে হয় কত, অসাধ্য সাধন # অন্টন-নিশাচরী, অতি ভয়ন্ধরী। जागत्न जिमार शथ, मांना मांग्रा शिंत ॥

CHESTIFIE !

আৰিক করিয়া থাকি, তান দপ চুন।
একেবারে ভাবে লাফি, কলিয়া দি দুন।
ভবে তো অভন হয়, নবৈন সালস।
ভব পণে বেতে ভাব, লগান সাহস।
আভাব কড় জানি, ছোট কচু নই।
মানে ভৈবে দেখা বড়, হই কি দা হই পা
হাবল ভা বল বিধি, আভিই জানীনা।
ভাগাহ কম্মা আহে, বক্লের আন।

धर्मत कंगाह जिलि ! के कर्ण मत ।
जनस जानां कर्ण जानित निका ।
त्वान करण हाई कार्मि, जांद्रांत क्रांनिरम ।
अकान कर्वियां निन, मत्त मठ जांगा ।
जांगारक किन्दिर लांगी, जांद्रांत क्रांनिरम ।
जांगारक किन्दिर लांगी, जांद्रांत द्य दन ।
जांगा करण माहे जांगि, कर्गांत द्य दन ।
जांग करण माहे जांगि, कार्यक मार्ग ।
जांग करण माहे जांगि, कार्यक मार्ग ।
गांग करण माहे जांगि, कीर्यक भागांति ।
प्रमास्त्रम स्ट्रंह कर्गे, माहित वांगन ॥
प्रमास्त्रम स्ट्रंह करे, माहित वांगन ॥
प्रमास्त्रम स्ट्रंह कर्गे, स्ट्रंह कांगांव-प्रसास ।
द्राह क्रांह त्यांवा, स्मार्गक निर्देशका ।

पता जारण गरि जामि, उँडिन मनिएन। णक्तित गृट्ट कहे, गणि, मुख्ता, हीएत । वर्गकात-गृद्ध इरे, सूबर्ग कुरुन । স্ত্রধর-গৃত্ত ধরি কাটের গড়ন। कॅमिकि गरे हैं है, बी नहीं शता। गालित डेकेटम इके, कुक्रायत गोला। পান রপের হৈ আহি, বাকই-জাগার। महात्रांक गटर बहि, मत्मान-आकार ॥ ममोडोब्रभञ ब्रोटम, मन्नोप्तक-द्रश्टर्। অব**ছিভূ ক**রি <mark>জানি,</mark> অতিশয় গ্লেহে। रम गांत गारमां करत, आमि तमहे तारम। खाँत यदं नाम केति, मकन श्रीटमरमा ॥ रावहाँगा (जांभां जन्मा, माम्बी-मिन्ना। াদকলিখনে আমি, সৰ আমাতেই বহ B আমি তক, আমি গুল, আমি ফুল, ফল! आंबि होता, जापि कड़ी, जावि एक कता। আমি বেশ, আমি ভূষা, পুলামি পরিধান। जागि मूग, जागि, द्रांगा, जागि होन शंज ॥ মবল এলাচু আমি, আমি দাবুচিমি। जानि पर्वि. जानि, इक्ष, जानि शुछ हिनि॥ अपि कींफ़, बाबि धूरी, आपि हांकी नता। আনি মণ্ডা, জানি গোলা, আনি রসকর। वानि गवा, कानि थोकां, आमि हानावजा। व्यक्ति हाएं।, कांबि त्रकी, आमि जारी रूका है

(बार्यनमूम्म

जामि धूजि, जामि भागि, जामिहे कंगीन। जागिरे छेड़ांनी जात, जागि खोड़। गान ब সামি যোড়া, আমি গাড়ী আমি নিকেতন। अ। मि भानकी, कारि छोकी, आपि कारोगम পরাতকে এইরপ ক্রব্য অগণন। নিয়ত মরের করে কল্যান সাধন। मकरलंद्र छेलेरह, आयात श्राष्ट्र जीव। সহতে না বুলা যায়, আমার এ ভাব। आभात अकर्भ जत, शांगीय संतर्भ। क्तरल श्राहर चार्ड, नांत्र आंत्र कर्ण ह ফলত সকলি এক, কি আছে সংশয। रिनिम्य कडिटलरे, धन लांड रूप। मनात नेश्वती व्यामि, सन् व्य व्यापात । जामि पार काकि जोके, ठिनटए भरमाह ! মম অনুরক্ত ভক্ত, বরাগাসে যত। লোমার কি অনুগত, ভাক্ত আছে তত্ ।। ত্তৰ ভক্ত হোতে কেছ, সহ**ত্তে ন**্চীয়। १७ द्धन त्यात्र करत, निक्तमूनोई। তব ভক্ত ছোতে खबंद इक्ति करत मान। তারে তারা একেবারে, করে অরি তান গ তৰ প্ৰতি ভক্তি নিদি, স্বাহাৰিক ন্য। করিলে ভাড়না বহু, তবে মন লয় ট मम जल रहोर हाए, इस्तिशं रहरन। जरा जरा करन तमा, नोना गोरि लाल । कथन ने हांत्र निस्, भूबिएए छोमात । जोत गोंडा बहे कथा, रिनिहा दुनात ह " राष्ट्रांतम ! दिलायम, कह खेलांचन । मात्रमात भूकोकर, निमार कोतल ॥ दिला दशदम माइनान, कड थम शादर। गाजी त्यांजा त्यारक कृति व्यवदिन त्यकारन। विनाः मा विकास वाष्ट्रां, रकाथां भीरत अस। ं दरगटन श्रीकृति स्थरल, सबनी ग्रांचन १॥ ्यमस्य शहिर्द्य भेटर, हेख्यं रमस १। किर्म भौति समकात, हरत कर अस १॥ विना। मा भिषितन वाला, दिवाह मा घटत । मार्चेनफ देशादा छूमि, वित्रकाल बटन # जमुरका मिटका छिटल, 'युरताथ नवीम। निरंथरेक बटनक विमा, लाए निन्ध किन ह जांकेरला अभव तम, ल्याराह डेक्न्यम । ্ভাই ভার কত মন্ত, বেড়েছে সম্পাদ। मन्यद्वन उद्ध द्वात. कड़ने दर्गाहत। रहेगाटह वंचीकूछ, मकन मानव ॥ दिना निथिताई बांध, अम मां हत ह धर जोंचं श्रांटिन लानि, कर सुरश प्रवृक्ष णाहे बाज अहत साहा, डेमारम्भ धत्र। (थनांत्र मा दर्गातं सड, त्नथा नंजा कर । वानाकारम रमभ भंगा, मा करते (म हिर्म। हमात नगत हरत, यूद् रशहन स्थरन ॥

शदत जोत कुःथ हम, दैरिह यह काल। তার তর্দশায় কাঁবে, কুকুর শিগাল! लिया भंड़ा रमार्थ भहि, अरमन कामाहै। দ্বঃথে জুংখে ছাড় মাটী, হইতেছে তাই।। जारका किছू कूल दिल, कूल मांजा मिता। ্দ সময়ে তাই ভার, শেমেছিল বিরা॥ এখন তে নাই আর. কুলের বডাই। একেবারে পড়ি।(তে, কুলনালে ছাই।। কাদীয় কপাল ফুড, সন্দেহ কি ভার। তাই তার ছাতে পোড়ে, হাহাকার সার । কিছু লেখা পড়া যদি, শিংগিত সে চোঁড়ে। তবে কেল গালি নিত, থোলে মুণ্পোডা। তবে কি হইত কেউ, ভার প্রতিবাদী । संख्यां कालर पुर खरत, के जिल कि काली है। শক্রমুখে ছাই নিয়ে, দন্ধীঃ কুপায়। अधिका एक्टल (काट्स, भटिएक कि मास । वैष्ठिश श्रोकिङ यनि, कानीत मा गार्थ। তা হোলে কি হোতো তার, এতই সন্তাপ । ভাই যে ভেছের বশ, ছে। চেছে সদাই। অভ্যার ভাই ভার, দেঁতে থেকে নাই ॥ ভাই দেয় কেবল পেটের স্তুটি ভাত। कारा कूँड़ी (शर्ड स्थरहे, मरत मिन हाउ । পা কিয়া ভাষার ভাষা, পায়ের উপরে। কেবল বসিয়া থাকে, কিছুই না করে।

महां जिल्ल समहीन, सांगी इस शह। এরপ ছর্জনা নাছা, ঘটে থাকে ভার। गारोत की श्रटकता, छोटकत एकन महा। डोता कि शूल्य कहे, शूकर कि मह ॥ অভ্ৰেষ্ট কাছা, হও সাবদান। विमां जाटलाइमा कति, इड विमानान ॥ বছ হোলে জী প্রভেষা, দশন ভোষার। . ভাত কাপড়ের ছঃগে, কাঁদিংই না আর " ম शहेकारण कमनीसा, विविध वजरम । मिङ सिक भिरागात, खनाइ मजरम ॥ ধন-আদা আশা দিলা, প্ৰচাক কৌশলে। उजांगाद्य मेरिकटल एनथ, निक्षमिट्रा वटन ॥ অমাৰে পামার ভাবে, সঙ্গদা ভোমার। आगादक पांडरन गम. मराक्षाम महाद्र॥ आगारक भारति दासा. १ कि ले शांकिए।.. ্তাম কৈ পাইতে কেনা, ঘতন ক্রিড ।।

गरस्टी।

আমার ভারতী, শুন লক্ষী সতি, কিঞ্চিৎ গীরভাগর। কেন স্থসা সহু, করিছ কলহ, আশু ক্রোণ পরিহর॥

(काट्धन्तृत्र ।

তুনি বিৰোদিনী, অনুজা ভণিনী, তাই এত কথা সই। মনে শত আছে, বল মম কাছে,

ভাতে বিধালিনী মই ॥ বাছাতে অ মান, তা ওবের গাল.

আহা! করিলে সোনেশ। চোলোকি কারণ, ভোষার এখন,

ময় প্রতি এত বেষ গা মূপে ভাপনাব, বন্তুণ প্রচাব,

কিং। অমুচিত ভাতি। ভাই চপ ক্রি. সাধা ভাব ধবি,

কেংরেজি লো গুণবৃত্তি। ॥ পাত্র কাল বেশ, ভাবিয়া নিশেদ.

त्भागन करिंद करतः।

যথম গেমুক, তথ্ম তেমুন,

कतिशो मगग्न इट्ड ॥ आमि मिटंच वाली, वित्त मङ्ग वाली,

সংশ কণিতে কি হানি। আনার বিষয়, অন্যে ভাত ময়,

কানি নিজে যত জানি। তুমি নিজে মানাং, কান্যকৈ সামানাং,

তেবেড় কি ষলে নদ্ম। ফাঁমার বচম, কলিলে শ্রিবন,

जग गरिन छङ्करन ।

সত্য বুটে কর তুমি, জনতত্র শিব नला राष्ट्र (जांगा दिस्ति, किंगल कीर। माला बढ्डे मकरें नहें, 'हम अर्जेडें। मक, बट्डे जटवं दमहर् छव बट्ड ग्रंड ॥ সভা বটে সকলৈই, ভোষাকেই চায়। मजा ना मकरमंड, भरा जिन शीह ॥ মতা বটে নানারপা, তোমার ফাকার! সতা বটে তোমা বিনা, চলে না সংসার। मका बर्षे कृषि १७, भन्नात तिछन। সতা ৰটে ভোমা হোতে, সকল উদ্ধ । গ্রাই ভূমি আপদাকে, কর বছ জান। তাই তব বাড়িয়াছে. গত অভিযা**ন** ॥ ভৌমাকে সামান্য নেত্রে, দৃটি করে ঘারা। তোয়াকেই বড় বোলে, জানিয়াছে ভার।। भर्तात अटमक इलाक, मामांमा मेश्रम । ভোমাকে হে দরশন, করে প্রতিকাণে॥ ट्यामांग अस्तरक छाई, वड़ रनि कारन। ভোমায় অনেকে তাই, বড় বলি মানে। ज्ञान-त्मरत य जोगोर, कटत तिरलोकन। আমি বে কেম্ন ওলো, জানে সেই জন। অস্প লোক আদ-নেত্রে, হেরে লো আমান। মম দরশন তাই, অম্প লোকে পায়। अन्थ त्मारक अहि तोन्, प्रय ६० शीह ! म्य अरहरुट। छोटे, जन्म लाटिक थांत ।

(बाटअन्मम् ।

নিতান্ত অভান হারা, নিতার অক্সান। क्मरम जामिटव जाती, जासीत मंत्राम ? অজ্ঞানতা-কূপে ডুৱে, অনেকেই আছে। ्क्यरम आमित्य जाता. शांद्र सम कारह ॥ महरकडे भागभारय, जरमरकरे बांत । अर्थान्य व्यटक दर्गाटल, घटते कड़ लाश । मकटलई शालशट्य, क्टबटक भगम। धर्माश्रद्ध शर्मा हेम, करतरह क ज्ञंम ? ॥ भारभन्न करभका यमि, धर्म द्वां हे रह। তা হোলে সামি লো ছোট, হব লো নিশ্চা । অভানেরা রভ থাকে, ভোষার সেবার। তোষার ক্রারীর রূপ, তাদিবো ভুলায়। রোগির কুপথা থেতে, সদা আকিঞ্চন[।] लेशन शाहितक रमने. मा होश कथा । তাহার আজীয়গার অম্নি তথ্ন। কত কথা বলৈ ভার, মনের মাজন ম "এইবার কর্ম কর. ঔষপ সেবদ। यो চাহিবে ভাষা থেতে, कतिन जर्भन ॥ (थटफ नित मामा फन, भीकम कीनम। খেলে হস্ত হবে তব, তাপিত জীবন " ॥ कूभशा थानांत कारण, तम द्वाली त्यमन। ইচ্ছায় ঔষধ পাদ, ৰঞ্জ তভক্ষণ ঃ সেইরশ মাড়া পিড়া, অভি সম্ভদে। धनलां क्षेत्रण निर्धा हलांत्र मन्तरम ।

धनमा स आभा कति, रामक-निष्य। অবিরত আমার, সেবগে রভ হয়। অজ্ঞানেরা মনে ভাবে, আর্থের কারণ। जश्मादह (कृतन इह. निका श्रादांकन ॥ তা হইলে ধনিদের বিদ্যায় কি কাজ ?। विनाशीन रहारेन छाता. दरम शांत्र लांक १॥ अञ्चल दार्थ (वान्, कति विरवहना। धटमह को हर्न मय, यम च्याताश्रना ॥ পরার ভিডরে হয়, যে জন সভ্যান। সে আনায় ভাৰশা, কবিৰে বভ জান। ভোমার কুতকে তার, ভুলিবে না মন। তোমাণ বলিবে ছোট, বথন তথৰী। अटलो का कि ! भटन टेस्टर, (मथ cell क्योर[†]र । একেবারে অভিমাতে, কর পরিহার। অনুভবে বুকা গেছে, নও জ্ঞানবভী। নতবা ঘটিৰে কেন, ভোমার এ মতি । ॥ कान मां कि जामि ला, क्रम मिनि हरे। সার জান কই তব, সার জ্ঞান কই ?॥ ৰহীতলে দত দেখ, উত্তম বিষয়। अधिक मो इश आहा, ऋधिक ना इश ह ভার অতি অংশ ভাগ্ন, মন্দ্র মমুদর। रहा है कड़ गुक्र लड़े, **बहे कथा** कर ॥ আনেকে ভোমার ভক্ত, নিখ্যা কিছু নয়। নিয়ত তোমার ভারা, কেনা হোরে রয় **॥**

(बाद्य-एम्स

মন অমুরজাভাজ , অভি অশ্ব নোক।
অশ্ব নোকে পেয়ে থাকে, জানের আলোক।
তব বহু ভাজ বোলে, ভূমি কি লো বড়।
এ কথা কি মানে সেই, তানে যেবা দড়।

ভগিনি ৷ আৰি তোমার শহিত বিবা कति एक इंच्हा कति ना। जुनि क्लापकर्व अ এক বার কত কটু কথা ব্যবহার করিতেঃ তোনার কথা শুনিয়া হাত্য না করিয়া ক্ষা इंटेए शांति ना। जाशनात्क वर्ष मध्या করিবার নিমিন্ত যত অলীক তর্ক বিজর্ক করি তেছ, জোমার গ্রতি ততই স্বশ্রন্ধা জন্মাই তেছে, তুমি প্রথমেই বলিরাড় যে মনুষ্যে তোমার অন্তঞ্লাভ ইচ্ছা করিয়া বিদা , लात मजुनील इनेशा शांदक, जनः विणाला করিলে যদি তোমার কুপাপাত হইবার সম্ভ नमा मा थाकिङ, उरंद (कर्डे निमासूनीनम र রিভ না ৷ তোমার একথা যে নিভাতই ং গ্রাহ্ম ভাষার কোন সংশয় নাইন আরাধনা করিলে যদি ভোমাকে পাও •বার তবে জার তেমার স্থারাধনা করিব **

প্রয়োজন নাই। বিনা জারাধনায় কেতৃই
আমার অনুগ্রহ লাভ করিতে পারে না, এই
নিমিত জামি আরাধ্যা হইয়াছি, মৃতরাং
তোমার অপেকা শ্রেষ্ঠাও হইয়াছি।

मूथ नामितिहा क्या क्या विता ।
वर्ष त्यांस् (पाटन मान, ताथिव ना जाह ॥
वस्तार वर्ष त्यांटन, मान ताथि वर्ष ।
क्यांत कथांत वह, जर्भमान कर्ष ॥
वर्ष विता वह त्यांटन, त्यांन बीटन वाटन ।
जान त्य क्रेंटन वर्ष, वर्ष विता जांदा ॥
त्यांकांनटस विता जूमि स्थाल नवाटन ।
स्थेन ज्यंन जांता, वर्ष वर्षा कोटन १ ॥

সরস্বতী।

দে কণা কাজের নয়, অজ্ঞানে হা বলে।
আন্তঃনের মতে বল, জানী কি লোচলে ।
জগতে যে সব লোক, কলিছে বসতি।
ভার মধ্যে অনেকেই, জ্ঞানহীন অভি ।
আজ্ঞানে ভোনার বড়, বলে মহা ভহা।
অক্সানে বিশ্বাস করে, অজ্ঞানের কথা

কাজে কাজে বহু লোকে, তব অসুগাড় ভোমাকেই বড তারা, বলে ক্রমাগত ঃ कामी यांद्र वकु नटन, वकु रह राहे। জ্ঞানির নিকটে কারো, অনুবোধ নেই 🛊 বাঞ্চ আভদ্তর তব, করি বিলোক্ষ। बनाशांटन कुल यांच, अक्तांटनत बन । बटन जोटन सूर्य तटन, जनायात श्रीरम। তোমার অর্জনা করে, সব নিয়া কেলে। দয়া ধর্ম সভাতার, করি পরিহার। নিয়তই প্তা করে, চরণ তেখোল **॥** कु जित्मत जत्त अरंग, धहार जिन्दा । একেবারে বাসা করে. अवटर्शन घटत ३° ক্রন্ত হইলেও, কাশায় বঞ্জিত। कर जात क्यारमानम, मा दय किंदिए । व्यक्तांन शहात उक्त, तारे वं दक्तान । खनाहारत बूर्ता लन, एउ त्राण ॥ व्यक्तव कां कु दर्शन, वक्र तना दर्शन । বিছা বিভি আর কেন, করিতেছ গোল। रवान तथरम कटर स्मत्त, भनीत शांतन। दक्मरन दम खानित्न, इत्थ्र को यो ननं ? म ठामा कि कथन जारन, बामांत कि दम ?। आरम्ह कि करलाम्य, कारन कि कलम ? । व्यवार्तिक द्यवा कात्र, मनावे कर्थ। कमरन सानित्व माहे, वार्तित्कत सूथ । व

र्योवरम कि ভारतामग्र, वांतरक कि जारन १। कांना कि जानिए भारत, कि जानम शास न অন্ধ কি বলিতে পারে, শোভা কারে কয়?। চিরবোণি লোকের কি, স্বাস্থ্য-সূপ রয় ? ম ভক্তরে কি ভাল লাগে, চল্লিমার আলে।?। कारक कि शिरकत तर, कड़ लारभ छोटला व অসাধ কি ভালবাসে, সাধুর বচন १। अश्काती कान्दिर कि, नम्छ। कि धन १॥ অপ্রেমিক জানিবে কি, প্রণ্য কেনন ?। मदल हित्र शहर, श्रम कि क्श्रेम ? ॥ मीठ कि कथन जारन, मानिद कि मान ?। জ্ঞান কি ছানে কভু, জানির কি জ্ঞান १। অভ এব মম গুণ, তুমি কি জানিলে 🕮 বড় হও এ কথাটি, মুখে না আনিবে॥ মিভান্ত অসার বোন, ভোমার পেবিষ। खानिगर् जुल्ह करत, छोमात विचर ॥ তোমা হোতে হয় শিব, জীবের মেমন। ভোমা হোতে হয় পুনঃ, অশিব তেমন ! তুমি সবাকার কর, যত অকলাণ ! তত কি কর লো বোন মঞ্জ বিধান থ। আমি কথনই কারো, করি না অহিত। क्वन गांधन कहि, मवाकांत्र हि**छ** । यात्र किंदू विनवात, मारे आहाजम। এতেই যে বড় ছোট, হোলো নিরূপণ ।

विद्रिम्मृषम् ।

त्यम कुरवह मात, कीत हाना नमी। रामन कृषित महि, मलुदकत मृशि ॥ यमन उकद्र मात्र, मूगध्र कन। বেমন সর্ফী-সার, স্থবিমল জল ॥ ষেমন পদ্মের সার, মধুই কেবল : যেমন ভোজন-সার, কলেবরে বল ৪ যেমন চরণ-দার, স্বপথে গমন। रम्यम खार्थ-मात, मुक्था खार्व ॥ (धमन नव्रम-मात, डीर्थ प्रतानम । रम्भन नौमौत मौत, सूत्रोम अह्न ॥ रशम इमना-मांत, मधुँक काम। হেমন ভাতুর দার, কেবল কিরণ্ড বেমন শশির সার, সুধা বিভর্গ। यमन प्रदेश जोह, शांत्री वित्रवर्ण ॥ মেন অন্ত্রের সার, তীক্ষতর ধার। यमन वर्लंद्र महि. श्रंद-डेशकात ॥ मिमन यूर्व-मात, (करन यूर्व। ষেমন ভাষার সার, সমুদয় বর্ণ। বেমন ইকুর সার, চিনি আর খাঁড়। বেমন দেহের সার, রক্ত আর হাত। সেইরপ আমি বোনু, ধরণীর সার। বিফল জীবন তার, আমি নই হার ॥ व्यामि यठ कति, मक्ति! छव छेशकति। তত কিছু তুমি নোনু, কর না জামার। যনিও তামার কাছে, আমা কুষ্টিম। যদিও অনেকে নয়, আমাব অধীন ॥ তথাপি আমার বশ, গায়ে সর্বজন। তথাপি আমার বশ, তব ভক্তগণ। ॥

नकी।

वात वात निभि द्वांदल, यक मौस ताथि। दोर वोत जब कथे, यक भारत थाकि ভঙ্ই দে বাড়াবাড়ী, করিভেছ কেন ?। कि कांद्र (प्रवादिय, केंद्रिएक (श्रम ?॥ यूथ दिशादिक द्वित, रोधित ना आहे। अञ्चर्मन करि दश्ति, उन नानश्तेत ॥ इक्रियटी कामवजी, त्क रहन राजांगांत ?। শুনিয়া ভৌষার কথা, অন্ধ জ্বোলে যায় 🛚 মাগালে আমায় তুমি, রাগালে আমায়। विश्वाम मां कर ज़िंग, लांतकर क्यांग ॥ व्यागीटक विलिश दफ, बाद्य बाहा गांन। ভোনার বিষ্ঠারে বুঙ্গি, তারাই অজ্ঞান ॥ मिट्य ज्वि कामरेडी, बकाम मराहै। এই কি জানের কথা, ডোনার সুধাই 🛚 আমা হোভে জগতের, কি কি অপকার। तका कति क्ल पाबि, श्रीम अक्तरि ।

(वार्डनम्मरा

সরস্বভী।

कलहकातिनी सम्, य कुलका निनीः छक्षम-अनुगर्ण, गूर्शर-गांगिनी ॥ ভোমার সহিত করি, তাহার ভলন'। मक्की लक्की नरल औरत. गक्ट ललमां ह कलर कतिए। स्थि, डाडिएडक गला। नां बारन ट्रांबीटन मक्ती. करे बांच नले । তৰ গুণ কেছ বৃত্তি। অৰ্ণাত নয়। मूनीमा नातीहरू लाहे. जिन्ही जाता कर व ভাষারা সামিত থাকি অভাগ ভোমার ! सभीनारक लक्की छटर, रुनिङ कि चार १। তোমা হোতে হয় হত, অনিষ্ট ঘটন। একে একে সমুগয়, वानिव এथन ॥ व्यागांति का विमान, व्यामि विमान के शही। ভোষারি ভো ধন, লকিছা হুমি ধনেশ্ররী ৰ সংসার ভিতরে জাতে, তিলল হার ধন। अहे हुई त्नारत माना क्या उपायन ॥ विना। यनि दछ हम, जामि तफ जरव। ধন বড় ছোলে ভাবে, তুনি বড় ছবে 🛭 विमार्गत व्यक्तिल दर्गात. एम दर्गत कायांत । 'ধনের যে দেয়ি আঁটে, সে দোয় টোমার 🕯 विमानि दिनादेश क्यो, दिन्ह माहि कहा। चाउ এर मम दलाय. माहि का निम्ह्य s

ধনের অগণ্য দোৰ, করিব প্রমাণ।
জানাইব ধন হোডে, যত অকল্যাণ॥
অতএব লক্ষিয়। আর, করো না বড়াই।
শুনিলে পলাতে আরু, পথ পাবে নাই॥

বড় নিদি বল বল, বিলম্থে কি আছে কল,
বল শুনি গনের কি দোষ ?।
আমি অভি ছুইমভী, আপনি ভাজনী অভি,
জান না কি, কারে বলে বোষ।
ভোমার যে রাগ হয়, সে রাগ কি রাগ নয়,
এ বে বড় আন্চর্যা ব্যাপার।
রাগিয়া বলিলে যড়, সহিলাম ক্রমাগত,
ভারো কত বলিবে আবার।

সরস্বতীর উ**ক্তি**।

क्ष्माटम बलिव द्याम्, जाल जब धम ।

कि जमिस्र माहि घटडे, धटमद कांद्रल १ ॥

कांजांत्र वांजांत्र दर्ग, स्त्र दमटम दम्दर्म।

भावन्यदि दक्ष्मल, मजांत्र महा द्वर्ष ॥

कटम बटम दम्मामटल, द्वर्गधक्दद व्हल ॥

तरक्षद जिम्मी वटह, मुम्दद स्त्र ॥

ं द्वादेशनमृतंत्र।

মারামারি কাটাকাটি, অবিরাম হয়।
একেবারে হত হয়, কত হাতী হয় ।
একেবারে অনেকের, পরাণ বিনাশ।
অনেকের উপস্থিত, হয় সর্ক্রাশ।
যথা তথা শুনা যায়, সুধু হাহাকার।
যত অনুষ্ঠের মূল, অর্থই তোমার ।

ছুপতি না পোঁতে প্রায়, প্রজার মক্ষল।
করেকরে কর লয়, করি নান। ছল।
ছুংপের সাগরে ভাসে, প্রজা সমুদর।
তথাপি রাজার কিছু, দয়া নাছি হয়।
মকক্ না প্রজা সব, ফাতি কিবা ভায়।
ধন মাত্র এলে হয়, ধনের শালায়।
একটুক্ সুপ কারো, মানসে না রয়।
কথন্ কি হয় বলি, সনাই সভয়।
ধরায় এমন রাজা, কভ নেথা যায়।
রাজার নোভের ভরে, প্রভা কেশ পায়।
রক্ষক ভক্ষক হোলে, কোথায় নিভার।
মক্ত, অনপ্রের মূল, ভার্যই জোনার।

লকারা ভাকাতি করে, সাদিয়া ভবলে।
স্বকার্যা সাধিতে তারা, বগে কত করে।
হার হার দেখ বোল্, গ্নলাভ তরে।
সংরে না থাকে দরা, সংরের উপরে ॥

धटमत कांत्रनं स्थु, कांत्रं कृति करत।
व्यवस्थाय भन्नां भारत्व, व्यवदानं कींग्रंतः ॥
भाषित्वता भारतं भरत्व, ज्यवदानं कींग्रंतः ॥
वग्रवदि छती लांदर, ज्यान छती भरव ॥
क्छ लांदक मस्तात्वि, करत जहेत्ररभ ।
निन निशां जिँदनम, व्यवस्था कृष्ण कृष्ण ॥
कांश्रास्कारत कांगाक्र ति, करत ला व्यभात ।
यञ्ज व्यवस्थित मृत, क्येहे 'कांगात ॥

কত কুলবতী তাজি, আপনার পতি।
ধন-প্রতাশির করে, কুপ্থেতে গতি ।
আনারানে কালী দেয়, অকলম্ব কুলে।
আমির বতন হত, একেবারে ভুলে।
ভাল করে কেহ কেহ, জপ্রাল ঘটায়।
আপনিও মজে আর, অপরে মজায়।
আনি কোরে হত হথে, কত জমীলার।
আনিয়াছে, জানিতেতে, জানিতেও আর।
ভাল কোরে রাজঘারে, অবিশাসী হয়।
আর কি বঙ্গের জন, পূর্করিপ রর १।
ধন লোভে হয় লন্দি, এরপ ব্যাপার।
ঘত অনর্থের মৃদ্য, অর্থই তোমার।

মিথ্যাসাকী হয় কেছ, করি নানা ছল। অনেকের ঘটে ভার, কত অব্লুল।

(वार्यम्पूपश्रा

कान रिर्मान करत, कमान्ति नाहि।

या देन्हां करिएल भीरत, खूम यनि भीत ।

करनक केनेन खाटन, कान कर माना।

कान करत नानरिक, कानरिक करत माना।

करनरक मानदिक, कानरिक करत माना।

करनरक मानदिक, कानरिक करत माना।

करनरक मानदिक, कानरिक करत माना।

मराधान हरा बानू, कानिशा खनाम।

भेताबीम हारिक जान, शारत करे मान !।

वह ठाई, कर भारे, जांदांत अभान।

मना भानाभानि लांह, जांत जित्रकांत।

ग्र जनर्थात मृल, जार्थर जानात।

বস্থুতে বস্থুতে আর, গৃতিক দা প্রাণা।
বস্থুতার পরিহরি, জরি প্রায় হয় ৪
সংহালরে সংহালকে, হল মলাস্তর।
অন্তরে অন্তরে হল, প্রেছের অন্তর ।
একেরারে ভিড়ে হাল, একতার পশা।
লোকে করে পরিহাল, ঘটে সর্কাশা।
লোকালয়ে লোকে করে, বাল বিনম্বাদ।
করে অন্থিরে কুপ, পরস্পরে খাদ।
সংসারকে বোধ হয়, অস্থারে মার।
কেবল ধনের ভরে, আত্ম হয় পর।
জার্থের যে দোব নাই, কিসে বলি আর।
বত্ত অন্থের মূল, অর্থই ভোমার।

व्यर्थत कांत्रन कांचा, शत-जक्तान।
व्यान कांचान करत, इस मश्रमान॥
व्यान कांचान करत, इस मश्रमान॥
व्यान करत द्वान र्वाक्, रेतराम श्रामान कांचान करू, निकार प्राचीन।
व्यान करू करू करू, केंकिर कांचान ॥
व्यान कर करू करू, केंकिर कांकिश्वन ॥
वांचा व्यान कर कें कित कांकिश्वन ॥
वांचा व्यान कांचान कांचान वांचान वांचान ।
वांचान कांचा रहाक, विकार कांचान।
वांचान कांचा रहाक, प्रवान कांचान।
वांचान कांचा रहाक, प्रवान कांचान।
वांचान कांचा रहाक, प्रवान कांचा।

পুর্বের অবস্থা আর, নাহি থাকে মনে ॥
পুর্বের অবস্থা আর, নাহি থাকে মনে ॥
বাহার সহিত ছিল, অটল প্রণায় ।
প্রাণাধিক মিত্র হেবা, তুলিবার নয় ॥
বার সঙ্গে, মনোরজে, থেলেছিল কত।
একত্রে যে বন্ধুসহ, বহু বর্ষ গত ॥
অনেকে এমন মিত্রে, পেয়ে কিছু ধন।
হার হায়, একেবারে, হর বিশারণ ॥
ধনমনে এথকার, মত্ত হোরে রয়।
চেনে না বলিয়া ছলে, চার পরিচয় ॥

(बारथन्तृषद्य।

মিত্রে মিত্র ভুলে যায়, ইকি চমৎকার। যত অনর্থের মূল, অর্থই তোয়ার।

सत्त मानदित गरन, जत्य काश्यात ।
तिथिति विधिति धनी, सदत मृजाकात ॥
व्यवकात-जनकार, द्वाद द्वाध द्यः ।
तुक कृताहेश थारक, मकल ममत्र ॥
व्यापनारक वर्ष द्वारक, गुक्क करत मत ।
व्यापनारक वर्ष द्वारक, द्वाक करत मत ।
व्यापनारक कार्य ना रम, र्वारक करव मत ॥
व्यापनारक गृरक करल, जन्यार्थना माहे।
वक भा र्यारक हारल, करत जाहेणाहे॥
विम्म कृष्टि रिपोणी, दुक्ति रमहेत्रभ ।
वस्त मदन जात्र, जात ज्ञाह्यना ॥
वस द्वारक रमन जात्र, जात ज्ञाह्यना ॥
वस द्वारक रमन जात्र, जार्थह द्वाधात ।
वस कमर्थन मूल, जार्थहे द्वाधात ॥

ধনবলে ধনী করে, ক্ত অত্যাচার।
ধরাধানে দে সকল, অংগাচর কার ?॥
সাধুরা কুজনে ছেরি, সভর ধেনন।
ধনহীন ভর করে, ধনিকে জেন্ন ॥
অনেকে অলস হয়, ধন-পেলে পরে।
কজতাকে একেনারে, বিস্কুন করে॥
রিপ্রল করে বল, ভাবের উপরে।
ধরত্তির ভয়ে আহা, নির্ভিণ্ড সরে॥

्बाट्सम्बन्धः।

भीव बूर्क, युक्ति खाँब, खतर्मन इत् । विद्युक ना क्य क्यां, पूर्ण कारत तह है बर्क्सारत म्यूनम, खर्बत मश्हात। यक खनर्यात मूम, खर्बहे द्वामात है

कारनक शनित कार्या, मर्गटरांश माहे।
कारने कि स्टन-भटन, कार्य कार्य कि कारने कारने कारने कारने कारने कारने कारने भीति कारने भीति कारने भीटने कारने भीति कारने।
किम तित्र कथा कारने, मूर्य माहि कारने।
किम तो असम स्त्र, मेथ्दिन मा माहिन ॥
मश्मान-ताभीदित कार्या, जल करितकः।
माम-भीटिंग मन स्टारने, काल करित भेड़े।
साम-भीटिंग मन स्टारने, काल करित भेड़े।
साम-भीटिंग मन स्टारने, कि माहे मान।
भित्र काला रागे, महिनस् कि कारने।
कात कि निकान कार्यन, क्षिण नार्यने।
कात कि निकान कार्यने, क्षिण कार्यने कार्यने।
कात कि निकान कार्यने हिनामान ॥

मालूरिय मालूम कार्तन, क त्य रङ् त्यन।
भित्रक मत्तरक कार्तन, त्यारण ना व्यादन ।
भित्रक करत कार्तन, त्यक्तभ गार्चात।
केठिक कि, मत्रव्यक्ति, कर्ता त्म व्यक्तात ॥
महाका कार्यात कार्तन, महाका कार्यात ॥
महाका कार्यात कार्यात महाकार भाग ।

व्याद्धमन्त्र ।

सर्ग तक रहारत लोक, क्रिमिन्स गांत । नित्रक नत्रन-मीरत, मरना क्रः रथ नांत ॥ शिव्यांत होहोकांत्र, क्रमियांत करत । खक्रम-वित्रह-क्रुरत, वक्ष मिन खुरत ॥ क्रांतना-मांगरत जांत्र, नाहि शांत शांत । यक क्रमर्थाई मूल, जर्बई रहांमांत ॥

क्र क्र वांग कृत्ज, आंशनांत शंति ।

अ देखांत मह करत, यक कर्य कांति ॥

आंशनांत शिठ कृत्ज, क्रिश लांति शाला।

क्र क्र गांत्हरक, क्रज़्क शांति शंति ॥

शांत शांत्र मनलांति, यक मनमलां ॥

क्र शांत्र शांति मह त्मरे, आंशन आंखरि ॥

सांत्रा कि मह तमरे, अंभक अंद्रुठ ॥

क्रमान अन्यां करते, अर्थन अंद्रुठ ॥

क्रमान अन्यां करते, अर्थन निवस् ।

ति शिंका को शिंका नह, करतह सम ॥

क्र कृत्थ तम मृत्कत, खांतिमान गांत !

यक क्रमर्थंत मृत, अर्थेहे दकामांत ॥

कूल नोज़ं (एवं क्लिन कूलीन तांचान। क्लिन कूटल जय जोत्र, नाई निक्तशन व मंक कूलकांचिनीरक, शाँतनव कटत। नाहि जारव जोराव कि, नमा दरवं शद व कार्य कांस् कांस कारह, महम माहि शरक।
कार्य नगः ह कि इस, मज़ी कारित नाइ ।
गांश्म मान, जातन दोना, मानसूज़ी किन।
शिरा कां हाएड कर्, नरतत स्थ दिना।
रिश कता दांग कांत, खतु दुड़ा मा याम।
भनामाद एनन एम, बज़ी कुलकार ॥
मडी इ थारक कि रोन, एम स्व कमार।
यह समर्थत मृत, अर्थ है दुड़ामांत ॥

বিকাৰ, কাণা, খোঁড়া, বুড়া, না করি বিচার।
পিজা কানে বিয়া দেয়, স্বীয় জনুজার।
ধনলোতে করে সেই, বিপরীক কাল।
চিরদিন তরে হানে, স্তা-লিরে বাল।
হায় হায়, খনাখার, ফেলে নের জনে।
তেমন বিবাহে কি লো, গুড় ফুল ফলে।
তাতে কি উতরে হয়, মনের প্রণয় ?।
তাতে কি লো কুলজার, কুল আর রয় ?।
বিবাহ ডো নয় বোল, পিছু লির জাল।
হংখের মনলে মন, পুড়ে হয় খাল।
অবশেষে যা হয় ডা, জনোচর কার।
যত অনধের যুল, জনাই ডোনার।

मार्थितं महत्तत्र शहन्तः महिन् भवनाः मार्थि स्मारत्र कार्याहरू महिन् मानन्। সাপ ছুঁ ড়াছুঁড়ি করে, ধনের আশার।
এর গার. ওর থার. সাপেরা দংশার।
কৈবে যদি বিষ থাকে, চলে পড়ে মাল।
সোনালের পজে হয়, সেই সাপ কাল।
মাপে নোহের থেকা করা, কভু শম সোজ।
চেপে পড়েড় ওগন, রোজার গাড়ে বেংকার
বাহিবার ডারে জার, থাকে মা ভাষোতা।
দেখিতে দেখিতে হয়, পরার বিয়োগ।
যত অশর্থের মূল, অর্থই ডোমার।
যত অশ্র্থের মূল, অর্থই ডোমার।

কাট কাটি হাতে লোক, মনের আশার।
কাননে বালের মুখে, জনারাকে যাল।
ধন পাব আশা করি, হাতে প্রাণ করি।
ভুফানেও নাবিকেরা, বেয়ে যার ভরী।
মেনারা রণের বেশে, রণক্তের ধায়।
ভুর্বিরা দাগারের, ভলার ভলার ।
কহা উঠে গগণে, কাননে করি ভর ।
কন কর্মেতে হোতে, পারে প্রাণনাশ।
ধন-আশা আছে ভাই, নাই কারো ত্রাম ।
ধনতরে করে লোক, বিপদ্ স্থীকার।
ধত জনর্থের মূল, অধই ভোমার।

अतिहांत, अलाहांत, अलेकांत, तन ।

स्तांत अतत रहा, अर्थित कांत्र ॥

गल तले मन जिल्ला, अतर्ख आहेत ।

सन रहारिक रहा मन, सन मनाशांत ॥

सरन कि कूर्क आर्ष्ट, तना नारि यात्र ।

लाहे रनांक " सन सन " कित्रा तिजात ॥

लाहे रनांक " सन सन " कित्रा तिजात ॥

लाहे रनांक " सन सन " कित्रा तिजात ॥

लाहे रनांक " सन सन " कित्रा तिजात ॥

लाहे रनांक " सन सन " कित्रा तिजात ॥

लाहे रनांक " सन सन " कर्ति तिज्ञ ।

आज्ञानितंन भरन जुम्क, करत निज्ञ ।

आज्ञानितं कार्र भाज, धरनत आंत्र ॥

मिल्ला वाकारात रक्तन, कत वांत्र वांत्र ? ।

मल अनर्थात मून, अर्थहे रलांचांत ॥

मवात ऋरथंत हेन्छा, आर् ह मरम मरम ।
मवादे वार्क्सिन त्याम, ऋश-अरहयरम ॥
किरम ऋथी हरन, छात, मा करत छेलाइ
धन छेलार्क्सन करत, ऋरथंत आंगाइ ॥
धननां उत्तरिम करें, ऋरथंत मध्यां मित ॥
धननां उत्तरिम करें, कामा मार्था मित ॥
धन छेलार्क्सिम व्यान, यछ द्वार्थ हम ।
धन छेलार्क्सिम व्यान, यछ द्वार्थ हम ।
धन धाकिरमहे छरम, स्माह क्रिमंत ॥
धन धाकिरमहे छरम, स्माह क्रिमंत ॥
सन धाकिरमहे छरम, स्माह क्रिमंत ॥

(वार्षम्भूमञ्जा

অত্তএর ধন শুধু, বুংবেশর অপিনার দ যত অমর্থের দূল, অর্থই তোমার দ

क्रवर्षट एक तक, यमनाम् इतः।
दिन्न भिर्म समर्थान, जक कल महः।
यम कर्षा गठ आहि, यक्ष ठाउ थनः।
अन्तर्वा १२ मनः, जनाटम मः नमः।
क्रवर्ष कि.८७ मनः, ইन्हा ११३ काटि ।
यमि अन मस्नं, नः शोटक छाउ काटह ।
छाउ दल मा इत्र मिस्रः छान जिल्लाम
यानमिक छिलाय, मानटम भिनाय॥
अकान नः शोप मन्दे, कुष्टेन्हाव कलः।
क्रवर्णत म्लावात, छायह दिन्दन ॥
यन द्शा क्रव्यात, ज्यात मनादः।
यक क्रवर्णत मृल, अर्थहे द्रामातः॥

यक्ती।

अकवात महान कति, हुन्ने काहत तरे। अञ्च कथा एउटन हुन्ने, कता गांत करे। एन्स्रोरिज नहमत ह्यास, शांकात श्रांकात। स्टानत श्रुट्यंत कथा, कहिएल मा कांत्र। 46

বুদ্ধিতী হোৱে ভামি, এক চোকী হোলে। বড হোতে চাও শুধ, দোৰ সব বোলে। विट्रकमा क्रज मिनि, शतिकति द्योव। মানুষের দোষ নয়, ধনের কি দোষ ? 🛊 व्यक्ति क्रियां यक्ति क्रिक्ट, मदक्कां करत । ভাছাতে অসির দোষ, কে কোথার খরে ? # ষ্ঠি-সহকারে কেউ. কবিলে প্রহার ॥ ভাগতে ষ্টির দোষ, কে করে প্রচার १। खरलंद कि मियं बार्टि, ज़रन भारत जरत १। क्रमालं (मांच किना, श्रीकृत क्रमाल ? । विश (शर्य (कह दनि, प्र श्रीन मश्होर्द्र । বিষেত্র কি অপ্রাপ্ত, ভোমাত বিচারে ? ॥ বিনামার দোব কিবা, ফোস্টা হোলে পায় १। वांशिका कि लोग, यनि क्वि एवं जोग १ ॥ मिडि कि मिथि गरल, मेडी मिशे शिलि १। যোডার কি অপরাহ, পোড়ে খোঁডা হোলে? # भारक छेरठे श्रीटङ स्मारल, इबिटर कि भारक १। অপরূপ কথা নিদি, শুনি তব কাছে। ধরণীর সমুদায়, সদা সাথে হিড। ব্যবহারে ঘটে মাত্র, যত হিতাহিত। बावशांत-छर्ग रह, यहिर्छ कलान। बारशंत (पार्य जत्मा, जांटड काकलानि । যাতে প্রাণ বার পুনঃ, তাতে প্রাণ রয়। ক্লব্য-দোষ গুণ ধরা, অমুচিত হয়।

८वाटथम्बूमम् ।

श्रामंत्र एका दानिक मार्टे, दानिक गमिरवर । चार्थमात त्नार्य घटि, मान्यत रागर । शहारा मा जारन निनि. भरमत वाजित। ধন তাহাদের করে. শুধু অপকার॥ कारमरकत धम कार्फ, (मध) गांत रहि। সে ধনে তালের কতৃ, শুত নাহি ঘটে ! रम धन ভारमत इस, कुःर्थन करित्। रम शरबड़े इस, बांबा अबिक्क रहेब ॥ छ। वरल कि श्राम जुनि, पुषित्र मनाहे ।। তোমার কি একটুকু বিবেচনা মাই 🕏 त्य मानद धमटलानी, हुसे धमण्डि। **जारत भार भिएड इमि, भार महस्र्डि ! ॥** অগতে সকল লোক, না হয় সনান। মানৰ বিশেষে হলে, যান, অপ্যাল ; অসতের হাতে গন, হইলে পতিত। ভাতেই কেবল হয়, ধরার অহিত। যথন সতের করে. মম ধন যায়। জগতের উপকার, কত হয ভায়॥ त्म भन कुःरथेड सग्, मुर्थंड कोड्न ! দীদের দীনতা হয়, সে গুমে হরণ 🛭 সে ধন তো এক সাঁহি, থাকে না সঞ্জিত। অনাথ অনাথা নয়, সে ধনে বঞ্জিড 🛭 **म धरमण्ड अनार्यंत्र.** द्वान निर्दादन भीमशीम मकरलंब, छेपत शालम ॥

বসনবিহীনগণে, থক্ত বিভরণ।
কাণা খোঁড়া কুঁজোনের, অভাব মোচন।
বিধবার নেত্রে আর, নাহি থাকে জল।
গৃহহীন, গৃহ পান, স্থলহীন, স্থল
ভতএব ধনে দোব কেন দেও আর।
ধনে কি হয় না বোন, কারো উপকার ?
।

मर प्रकी।

मागरतं प्रति वर्षे, मिथा कि मू मह।
श्वीकः व कि दिए हें हो, कां एक कां एक हथे।
श्वीकः व कि दिए हें हो, कां एक कां एक हथे।
श्वीकः महत्वाम हत्र, अमान्त महत्वाम।
श्वीदात माधुत मरम, श्वीत महत्वाम।
माधु तिन हत्र छोत, श्वशा छि धोकां मा।
श्वादात कां एह यन, श्वीद एक महत्वाम।
स्मार्थन कां ए यन, श्वीद एक स्मार्थ।
स्मार्थन स्मार्थकत, तिनव छथेन।
स्थिन मर्जत कां एहं, श्वीद वह भन।
स्थिन मर्जत कां एहं, श्वीद वह भन।
स्थिन मर्जत कां एहं, श्वीद वह भन।
स्थिन स्मार्थकत, रहा मर्ग्दकन॥
स्थिन कां हिए कह, श्वीक मन्त्वामा।

কখন কখন, দেখি, এমন আবার। मर त कामर इद. यम दश्ति छोत्र !! থানের ক্ষমতা আছে, মন্দ ক্রিবার। ভাল করিবার শক্তি, তত নাই ভার। অসং পাইলে দ্ন, নাহি হয় সং। বরণ সে হয় জারো, অধিয় অসৎ । অভএব ধন ছোতে, শুভাশুভ হয়। कामाद्र य विमा त्वाम, तम कर्भ दर्श नग्र ह অসতের বিদ্যা হোলে, হয় শান্তশীন। পুর্বভাব তার ভো, থাকে না এক তিল 🛭 मन्य द्रिष्ट्र श्रीय कात, अरकदारत लगः **अमि समील (पन. अमर (न नग्न म** मध यनि विनाधनग, करत केशा खंग। कारता मध्यत्र (महे, गर्थम अथम ॥ অভএব বিদ্যা হোতে, মতা তলে শিব। কারো ভো করে না লার, কথন জাশিব। धर्धार्थ (स दिला) छोट. कोन मिय सिहै। (स रिकार्ग शक्तिको करता, रिकार्ग सम ८ महै ॥ " विमा विमा " कता लाक, मथा उधार । भ्यातिक स्थार्थ निकार, क कम भतार ? ॥ পড়িলে চুপাত গুঁগি, বিদ্যা অংশ কই।। भारको विना मह, कारत, रिम्हा कि ता कहे १ I वर मृत विखातिक, आंभात स्तम। कछ विमा बाह्य जोग, माहे मिक्स भे ।

হিতাহিত ছুই হয়, ধনেতে তোমার।
কৈবল সাধন হিত, বিন্যাতে আমার।
আর বিবানেতে লন্মি, নাই প্রয়োজন।
আপনা আপনি ভেবে, দেখনা এখন।
বিদ্যা কি ধনের চেবে, বড় কি লো নয়।
তবে আমি বড় ভারে; কি আছে সংশায় ০৪

ল**ন্দ**ী।

ভোনার বিদ্যার গুণ, করিব জ্বরণ। বিদ্যা সোতে হয় কত, শুভ সম্পাদিন। শুনিয়া বিদ্যাত গুণ, করিব বিচার। বড় তে ট দোধ তবে, হইতে আগার।

সরস্থতী।

धानिशास कत लिक्ना, कत धानिशास ।
धान सम (गानिक के निमानि । अने करत मान ।
दिला के मानस करत, मगूर कनानि ।
किमाने मानस करत, मगूर कनानि ।
किमाने कार्यासकी, विमानिक करत माने ।
किमाने कार्यासकी किमानिक करत माने ।
किमाने कार्यासकी किमानिक कार्यास ।
कार्यास धानिक करत माने, मस्म नावहांत ।
विकास करत माने, मस्म नावहांत ।
विकास करत माने, मस्म नावहांत ।
विकास मानरक, कम्माने कार्यास ॥

(वादधन्तृष्यः।

मानतम्ब कृष्टिसांक, मुहोपूछ करत्। गोन्मिक अञ्चकात, এक्वराटर स्ट्र ॥ যত পারে ভভাবের, নিয়ম প্রায়। विमारिङ्के जार्सहरू, माहम जनाय ॥ বিদ্যা করে বলবান কিপুর সমম। ভাবে পবিপৰ্ণ করে, মান্তব্যু মন 🛭 काम करत देवनी यात्र, विर तक्या-सन्ति । ক্ৰমৰাঃ বাডাৰ সলা, প্ৰেমণে ভাজি ॥ প্রিবরদ হাকা সলা, ক্ষিত্তে শিপাষ। রভ করে পিতা লার, নাভার মেবায় 🛊 मन् कर्र यानरम्ह, अपूर्ण भवण्य । জ্মান অমিতা সব, সমিতা সংস্কৃত প্রমেশ সাহ মাত্র, মকলি অসার ৪ खर भार जिन इक मर्ग-भनामात । विमार्गवटन क्या ना ज. रह मध्य हैं। है। विमान जयांन जिक्क, (मांधर छ मा शाहि ।

লক্ষী !

অসামান্য শক্তি ধরে, বিব্যাই জোনার।
বার বার আমায়, শুদালে কত বার ।
তবু বড় হইবার, আহে অভিনায়।
বস নিদি! কিশে হবে, এ এর বিনাশ ? ।

সরস্বতী।

मश्मादित थाकिएक ह्हाटल, हाई तिक्रू धन।

क नथा खीकात मां, कतिएव कांन् कन १ ॥

ख्यांत्रि खानिएव दर्गन्, धन नत्र मात।
दूर्भण धटम खाटन, निटांख अमाद ॥

लक्षी.

বিনা ধনে কিশে হয়, জীবন ধারও ?। । ।
অনাহারে থাকিলে নে, সংশয় জীবন ।
বিনা ধনে পাবে লোক, কেমনে জাতার ?।
ভাবে ধন কেন হয়, নিভান্ত জদার ?॥

সরস্থ 🌖 ।

स्तर्शियम जरत. कांज कि लां भरम है।
वैक्षित जिल्ला भरित कांक, रश्तल भरित करन है
बरमत जकरं जारिह, मार्गारिश कन ।
ममीर जिल्ला आरह स्त्रीम, श्रुविमल जन है।
कर्मा जा स्टाट भीरित, भीमरभंत्र होन ।
किवा श्रुर्वाजन जांत्र, भीमरभंत्र होन ।
किवा श्रुर्वाजन जांत्र, भीमरभंत्र होन है।
क्या जिल्ला श्रुर्वाज कांत्र, भीमरभंत्र होन है।
क्या श्रुर्वाजम स्त्रीम, ध्रुर्वात विस्त्र है।
क्या श्रुर्वाजम स्वांत, जानियां मश्मांत्र ।
विस्ति वैक्षिताह, किंग क्याहात है।

योग्टम क्लाटबट्ट शांस, निजा नित्रक्षन। · কলিবলে যোগা ধামে. কেরিছে গমন ॥ न्द्र(थर ७ क्लार्ट्सर इ जाता, जीवन यार्शन। दक सभी मश्मारत व्यटक, जादनह यजन है। তালের ছিল मा किছু, विভব धराর। मिन निर्मि कार्त्रहिल, श्रीहाउना मात्र ॥ তর জারা শ্বথে ভিন্ন, চিত্র নর দেই। निक्छ क्रांसिटव द्वांस, धटन एव दस्हे ॥ धरम ऋथ नग़ निका ! एवं संधू २८न । स्थी कार् भारत लांक, व्यक्त कान्तम ह সদাগরা ধরাপতি, যদি কেউ হয়। किन जांत बान यनि, यूथ नांचि त्य ! ज्दन दम इष्टेरंड सूथी, माहिदन दमग्रम १। दियाल घडन डाइ, मुथ-इएबसर्व। অতএব বিনা গলে, স্বথ ছোতে পারে। निमा धरम कामी भारत, शांकिए मध्यात्म ह दिमा ख्डारम घटडे त्यांम, अनूथ अशाह। আনেই তো সুথ জনে, সুগ কিবা আর। বৰ্থন যে অৰম্ভায় থাকে, জ্ঞানি জন ! সেই অবস্থায় সুখী, হয় লো ভগন # यथन मर्गाद्य (महे, जांद्र ला अमात्र। তথ্য কি ধন প্রতি, দায়া থাকে ভার १॥ Cकरब रत कांब हटहे, भेरटरमे-भारिय। मत्म कात्र माहि लात्म, गांम कर्णभारम ।

द्हित्रां श्रांत धन, दिश्मां नाहि करतः।
आखारनत मा नाहि, नम्रकृष्टि मरतः॥
भरनत स्थानरम् रमने, श्रांतक वित्रकृष्टि।
य खारन विश्विः श्रांतक, करिते ना रम खान ॥
गारक श्रंतकार लान, स्टेरव कांचातः।
छोत स्थानि रमने, करतः कामिनातः॥
टेस्कारन श्रंतकारन, ख्यारम खानः॥
टेस्कारन श्रंतकारन, ख्यारम खानः॥
दिना-स्थारक स्था किछ, खारमत हेम्रिः।
दिना विक् कि मा वक्, ज्यान क्ष्मरिकः।
विमा वक् कि मा वक्, ज्यान क्ष्मरिकः।
विमा वक् स्थान करित क्षांम वक्ष स्था

लम्मी।

ভালকপে বুনিলাম, বচন ভোমার।

' তুমি বড়' করিলাম, এখন স্বীকার ।
বাসেতে বড় তুমি, হোরেছ হথন।
আমিই তো ছোট লোশ, হোরেছি তথন ॥
না বুমিয়া করি ছন্তু, ইকি বিপরীত।
বিবাদ উচিত ময়, তোমার সহিত ॥
ভোমা-হোডে হত ময়, কলাণ সাহম।
সে সকল ভালরপে, বুমেছি এখন ॥
বোলেছি অনেক মন্দ, অহকার-ভরে।
কোরৈছি কতই রাগ, ভোমার উপরে॥

८वाटभन्मृमञ् ।

(म मकल क्रम निमि । कड़ निक कुर्ण। আমায় বাঁধিয়া পুনঃ, রাথ মেহওণে। আর এক কথা দিদি! জিজাসি ভোষায় ৰুঝাইয়া দিতে হবে, এথনি আমায় ॥ কৌন লোক সৎ আর, অসং কে হয়। धन कि तम् ना मिनि, छोत भतिहर ? ॥ ধন না থাকিলে লোকে, কে কেমন জন কেমনে করিতে বল, পাতে নিরুপণ গ क्राजाटवट्ड क्रिकेशिंड, मानव जमन। ধন শাই বোলে ভার, শিষ্ট আচরণ ম মনে মনে কুকপ্পান', কড়েই ভাষ্ঠর। বাহিরে ভাষার দোষ, না হয় প্রচার। আবিরি স্বভাবে সং, জাত্ত কোন মর। পর্ষিতে রত যদে। তাহার অন্তর । পদ শাই বোলে শিক্ত, চপ কোরে রস। তাহার মনের কথা, প্রকাশ না হয়॥ कहिएक मा भारत रमके, भर-वेशक व । কেমনে পাইবে লোক, পরিচয় জার 🤈 🛚

সরস্বতী।

দয়মিয় পর্যেশ, সর্ধা-মূলাধার। মানবের ইচ্ছা লোরে, করেন বিচার । যাহার যেমন ইচ্ছা, সেই রূপ সেই। তাঁর কাছে কারে! ইচ্ছা, অধিনিত নেই। লোকে যদি নাহি জানে, লোক কে কেমন।
লাভ নার ক্ষতি ভাবে, কি হয় এমন?॥
কি করিলে পরকালে, হবে মাত্র হিড।
এইরপ সকলেব ভাষাই উচিত।

এইৰূপে লক্ষী এবং সরস্বতী উভয়েই বিবাদে কান্ত হইলেন: লক্ষ্মী সরস্বতীর मामाविष क्यांमगर्क छेल्राम्य-दाका ज्ञातन क-রিয়া মনে মনে অনেক তর্ক বিতর্ক করিবার পর আপনাকে আর শ্রেষ্ঠা বিবেচনা করিলেন ना वर्षे, किन्छ नाडिमध विभर्द छाव धातुन क-রিয়া বশিয়া র্থিলেন। তাহাতে বুদ্দিমতী সরস্থতী সতী স্বায়া অনুজার ভাব বুঝিতে शांतिश महामा-तम्दन व्यद्मक व्यद्वाध-वाका বলিতে খারম্ভ করিলেন, 'ভগিনি। ভোমার বিরস বদন অবলোকন করিয়া আমার ক্রদ্য বিদীর্ণ হইতেছে। হায় হায়! আমি তোমার নহিত কেন বচদা করিলাম ? জগতের মধ্যে তোমাকে কখনই সামান্যা ৰোধ হয় না। তো-মার দ্বারা লগতের যে কত উপকার হইয়া খাকে ভাহা বলা বায় না। বদিও ভূমি কোন

মতেই আমার নিকটে শ্রেষ্ঠা হইতে পার মা, তথাপি তোমার মতন মুখা আর কেছই রাই। তুমি আমার প্রতি অনেক কট্ট বাকা **প্রয়ো**গ করিয়াছ, কিন্তু কনিষ্ঠ। ভগিনী বলিয়া স্থানেক সহিষ্ণুতাও করিয়াছি। আমিও বহি কিছু विका बार्कि, छोड़ाछ मत्म कविछ मा, कार्र **८कार्छ। जीनीत निक**ष्टि कनिकांत्र मान अश-মানের বিষয় কি আছে ? আমি ভোমাকে না দেখিলে অভ্যন্ত পরিতাপিতা হ্**ই**্যভতএন সা-मात निरक्डरन श्रुक्ताशत समन चांगमन क-রিতে সেইৰাণ এখনও করিবে। নতুবা আমার আর অনুভাপের দীম। থাকিবে না। বুমি যদি কেবল অনিউকারিণী হ্টুতে, ওবে ভোগাকে গৃহস্থাশ্রমি ব্যক্তি মাত্রেই এতাদৃশ সমাদর কা রিত না। ভুমি মান সম্ভ্রম প্রাণান করিয়া থাক। ভোমার আশ্রয় গ্রহণ করিলে মনুষ্য অনেকা-**तिक विदुर्द्ध के अकार स्वर्धी** इटेट्ड भारत । ভগিনি তামাতে আমাতে যেন কথন বি-চ্ছেদ না হয়, ভাহ। হইলেই পর্ম ভাগ্য -বলিয়া স্বীকার করি। তোমাতে আমা**তে**

षामलन इकेटल ध्वामश्रदलव ममछ लिएक-রই অপার অনিই ঘটিবার সম্ভাবনা : আমি পূর্বের বলিয়াছি যে. লোকে কাননবাসী হইয়া कत भून खाहाद कतिया विना धटन जीदन यापन করিতে পারে, কিন্তু যখন ধরণীর সমস্তই তো-মার অধিকারভুক্ত তথন তোমার আশ্রয় বা-ভীত কেহই জীবন ধারণ করিতে পারে না। ভোয়াতে আমাতে কিছুমাত প্ৰতেদ নাই। তোনার সাহায্য ব্যতীত আমার ক্ষমতা প্রকাশ পায় না এবং আনারও সহায়তা ব্য তীত তোমাকেও ক্ষমতা-রহিতা হইতে হয়। আমি এক্ষণে ভোমাকে বর প্রদান করিতেছি যে, পৃথিবীর আবাল**রন্ধ**বনিতা সকলেই তো-भारक मधान अधान कदिता । य राजि छा-মার প্রিয়পাক হইতে সংদারে দে ব্যক্তি ষেমন **সম্ভ্রম** লাভ করিবে তেমন আর কেহই পা-রিবে না। অতএব দংদারের মধ্যে ভুমিই धन्त्रा रहेशा धाकित्वं"।

লক্ষী এবং সরস্বতীর এইরপ কথোপ-কংম প্রবণ করিতেছি, এমন সময়ে স্বামার: নিদ্রাভঙ্গ হইল। অক্সাৎ নিদ্রাভঞ্গ হওয়াতে আমার মনে যে ক্ষোত জন্মিল তাহা
নাক্ত করা বার না। আমার দমুদর সংশর
একেবারে দুরীভূত হটল। অক্তানতঃ বণ্ডঃ
যে অমোদর হইরাছিল; তাহা আর রহিল
না। যে বিবয় চিন্তা করিতে করিতে নিদ্র'গত
হইয়াছিলাম, সে বিষয়ের চূড়ান্ত সিদ্ধান্ত, অবগত হইলাম।

নিক্রাভঙ্গ হোলে পরে, করি হায় হার।
কি স্থা ছিলাম আমি, স্থানর নিক্রার চ আরো কত শুনিবারে, ছিল অভিলাব। আহা মরি! একেবারে, হলেম হতাশ। আরো কত জান লাভ, করিবাম তায়। বঞ্জিত হলেম আহা, দে সৰ আশাহন

मम्भून ।

শুদ্ধিপত

砂石

বিপরী ক

সমুদ্ধ

(যমন

জন্ম

मृश्विदव

RIF

বার

BUF

বিপারিত

संह

मसूत्रग़

বেশ্ব

জন্মান

ছ্বিবে

बांश

न्नाकांत বিদ্যাধ্য विमासन বক্ योक् 79 অসুমতি **জনুমতি** ₹8. অধিনী व्यवीमी . 45 -8 **সত্য**ভার गुजाबाव ৩২ **ब्राध्य** 9 35 99 भीखिम् मी खिनग ৩৯

85

æ5

95

çą

چ٩

ě

14

¢

3